mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-168 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
20 जून 2025 शुक्रवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

श्रेयस होते तो भारतीय... @ पेज 7

केन्द्रीय मंत्री अमित शाह बोले-देश में अंग्रेजी बोलने वालों को जल्द शर्म आएगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, इस देश में जो लोग अंग्रेजी बोलते हैं, उन्हें जल्द ही शर्म आएगी। ऐसे समाज का निर्माण दूर नहीं है। उन्होंने यह बयान गुरुवार को नई दिल्ली में पूर्व ढ्ढस् आशुतोष अग्निहोत्री की बुक मैं बूंद स्वयं, खुद सागर हूं के विमोचन के मौके पर दिया।

शाह ने हिंदी समेत भारतीय भाषाओं के भविष्य पर कहा, अपना देश, अपनी संस्कृति, अपना इतिहास और अपने धर्म को समझने के लिए कोई भी विदेशी भाषा पर्याप्त नहीं हो सकती। अधूरी विदेशी भाषाओं के जरिए संपूर्ण भारत की कल्पना नहीं की जा सकती।मैं अच्छी तरह जानता हूं, यह लड़ाई कितनी कठिन है, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि भारतीय समाज इसे जीतेगा। एक बार फिर स्वाभिमान के साथ हम अपने देश को अपनी भाषाओं में चलाएंगे और दुनिया का नेतृत्व भी करेंगे। अमृत काल के लिए पीएम मोदी ने पंच प्रण की नींव रखी है।पांच प्रतिज्ञाएं 130 करोड़ लोगों का संकल्प बन गई हैं। यही कारण है कि 2047 तक हम टॉप पर होंगे और हमारी भाषाएं इस यात्रा में प्रमुख भूमिका निभाएंगी। शाह ने कहा कि इन पांच प्रतिज्ञाओं में विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना, गुलामी के हर निशान से छुटकारा पाना, अपनी विरासत पर गर्व करना, एकता और एकजुटता के लिए प्रतिबद्ध रहना और हर नागरिक में कर्तव्य की भावना जगाना शामिल है।

प्रशासनिक अधिकारियों की ट्रेनिंग में बदलाव की जरूरत: शाह ने कहा कि देश में प्रशासनिक

अधिकारियों की ट्रेनिंग में कुछ बदलाव की जरूरत है। उन्हें शायद ही हमारी व्यवस्था में सहानुभूति लाने के लिए ट्रेंड किया जाता है। ऐसा शायद इसलिए क्योंकि अंग्रेजों के जमाने से इस ट्रेनिंग मॉडल की प्रेरणा मिली है। उन्होंने कहा कि मेरा मानना ??है कि अगर कोई शासक या प्रशासक बिना सहानुभूति के शासन करता है, तो वह शासन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

साहित्य ही हमारे समाज की आत्मा: केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि जब हमारा देश घोर अंधकार के युग में डूबा हुआ था, तब भी साहित्य ने हमारे धर्म, स्वतंत्रता और संस्कृति के दीप जलाए रखे। जब सरकार बदली तो किसी ने इसका विरोध नहीं किया, लेकिन जब भी किसी ने हमारे धर्म, संस्कृति और साहित्य को छूने की कोशिश की तो हमारा समाज उनके खिलाफ खड़ा हुआ और उन्हें हरा दिया। साहित्य हमारे समाज की आत्मा है।

शाह के बयान पर इंडियन सेक्युलर फ्रंट (ढ्ढस्स्न) विधायक नौशाद सिद्दीकी ने सवाल किया। उन्होंने कहा- शाह बताएं कि हमें कौन सी भाषा बोलनी चाहिए- सिर्फ हिंदी? हमारे देश में बंगाली, हिंदी, अंग्रेजी जो भी उन्हें पसंद हो, बोलेंगे। भारत कई भाषाओं का देश है। लोग अपनी पसंद की कोई भी भाषा बोलने और सीखने के लिए स्वतंत्र हैं। अंग्रेजी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है और इसका ज्ञान होना जरूरी है।

संक्षिप्त समाचार

ईरान पर बंटी पाकिस्तान की सेना और सरकार

इस्लामाबाद (एजेंसी)। इजरायल और ईरान में भीषण युद्ध शुरू हो गया है। इस बीच ईरान के मुद्दे पर पाकिस्तान की सेना और सरकार दो-फाड़ हो गई है। पाकिस्तान के आर्मी चीफ आसिम मुनीर ने जहां एक तरफ अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात करने के बाद ईरान के मुद्दे पर चुप्पी साध ली है, तो वहीं पाकिस्तान की सरकार ईरान पर इजरायली हमले के खिलाफ है। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने बृहस्पतिवारको ईरान पर इजरायली सेना के हमले की कड़ी निंदा की है। ईरान में पाकिस्तान के मुद्दे पर दो-मत उस वक्त हुआ, जब ट्रंप और मुनीर की वाशिंगटन में मुलाकात हुई। इसके बाद बृहस्पतिवार को प्रेसीडेंट ट्रंप ने ईरान पर मुनीर के रुख पर पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा कि आसिम मुनीर से बेहतर ईरान को कोई और नहीं

समझता....मुनीर का रूख इज़रायल के भी खिलाफ नहीं हैं। इधर पाकिस्तान की जनता और कई नेता मांग कर रहे हैं कि इज़रायल-ईरान की जंग में पाकिस्तान को ईरान की मदद करनी चाहिए..लेकिन ट्रंप के साथ लंच के दौरान आसिम मुनीर ने ईरान को लेकर पाकिस्तान का स्टैंड क्लियर नहीं किया। ट्रंप ने कहा कि आसिम मुनीर ईरान को दूसरों से बेहतर जानते हैं..जंग जिस तरह आगे बढ़ रही है, उससे वो खुश नहीं हैं..ट्रंप ने कहा कि उनकी ही तरह आसिम मुनीर भी चाहते हैं कि इस युद्ध का जल्द कोई समाधान निकले। इस पर मुनीर ने चुप्पी साध ली है। जबकि पाकिस्तान सरकार इजरायली हमले की निंदा कर रही है। पाकिस्तानी विदेश कार्यालय के प्रवक्ता शफकत अली खान ने साप्ताहिक प्रेस वार्ता में कहा, ''ईरान पर पाकिस्तान की स्थिति स्पष्ट और पारदर्शी है- हम ईरान को पूर्ण नैतिक समर्थन प्रदान करते हैं; हम ईरान के खिलाफ आक्रामकता की कड़ी निंदा करते हैं।''

नेपाल हो जाएगा मालामाल!

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल के हाथ बड़ा खजाना लग गया है। ये खजाना सोने-चांदी का नहीं बल्कि गैस भंडार का है। दरअसल, पश्चिमी नेपाल में मीथेन गैस का विशाल भंडार मिला है। ये भंडार इतना बड़ा है कि आने

वाले 50 साल तक नेपाल की गैस की जरूरत आसानी से पूरी हो जाएगी। गुरुवार को जारी की गई एक रिपोर्ट में इस बात का खुलासा हुआ है। अब इस गैस भंडार की गुणवत्ता और अन्य क्षमताओं का आंकलन करने के लिए आगे की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। नेपाल के पश्चिमी हिस्से में मिले गैस का विशाल भंडार करीब 430 अरब घन मीटर तक पहुंच सकता है। ये नेपाल में आगामी 50 साल तक गैस की मांग को पूरा कर सकता है। ये भंडार दैलेख जिले के जलजले क्षेत्र में मिला है। ये रिपोर्ट चीन भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (सीजीएस) द्वारा तैयार की गई है। आपको बता दें कि नेपाल और चीन के बीच 2019 में हुए एक द्विपक्षीय समझौते के तहत ये खोज की गई है। नेपाल में हुए इस गैस भंडार की खोज के बाद घरेलू ऊर्जा के स्त्रोतों का दोहन करने की संभावना काफी बढ़ गई है। नेपाल की सरकार के साथ भी खोज के परिणाम को साझा कर दिया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, पश्चिमी नेपाल में पहला खुदाई अभियान 11 मई, 2021 को शुरू किया गया था। ये खुदाई 4,000 मीटर से अधिक की गहराई तक पहुंच गई थी। इस खुदाई में एक कुएं में अनुमानित 1.12 अरब घन मीटर मीथेन गैस का पता चला था। नेपाल की स्थानीय समाचार एजेंसी गोरखापत्र ने कहा है कि खुदाई अभियान में 4 कुएं लक्षित किए गए हैं। जारी की गई रिपोर्ट में सिर्फ एक कुएं से प्राप्त प्रारंभिक रिजल्ट के बारे में बताया गया है। शुरुआती अनुमान बताते हैं कि इस इलाके में अनुमानित गैस का भंडार 430 अरब घन मीटर तक पहुंच सकता है।

मध्यप्रदेश सरकार ने जारी किए प्रमोशन के नियम

भोपाल (निप्र)। मोहन यादव कैबिनेट के लोकसेवा पदोन्नति नियम-2025 को मंजूरी देने के 48 घंटे बाद सामान्य प्रशासन विभाग (त्र्रष्ठ) ने प्रमोशन से जुड़े नियम जारी कर दिए हैं। गजट नोटिफिकेशन भी कर दिया गया है।सरकार ने कहा है कि 9 साल से प्रमोशन बंद होने से बड़ी संख्या में कर्मचारी-अधिकारी बगैर पदोन्नत हुए रिटायर हो रहे हैं। ऐसी हालत में राज्य सरकार की कार्यक्षमता पर विपरीत असर पड़ रहा है और कर्मचारियों का मनोबल भी घट रहा है। इसलिए सरकार ने पदोन्नति के नए नियम बनाए हैंपदोन्नति नियम बनाए जाने के दौरान आरक्षित वर्ग (रिजर्व कैटेगरी) को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने और प्रशासनिक दक्षता और योग्यता को महत्व दिया गया है।नियमों में कहा गया है कि सीधी भर्ती के पदों में एससी-एसटी वर्ग को 16 और 20 फीसदी आरक्षण दिए जाने का प्रावधान है। इसलिए सरकार प्रमोशन में भी इन्हें इसी आधार पर आगे बढ़ने का मौका देने के लिए प्रतिबद्ध (ष्टश्वद्बद्धद्बह्लह्लद्गस्र) है। गजट नोटिफिकेशन के साथ ही सरकार के ये नियम प्रभावी हो गए हैं।

देश में डेटा रिकवरी मुमकिन नहीं; अहमदाबाद हादसे में 270 लोगों की मौत हो गई थी

एअर इंडिया ड्रीमलाइनर का ब्लैक बॉक्स अमेरिका भेजा जाएगा

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद में 12 जून को क्रैश हुए एअर इंडिया विमान का ब्लैक बॉक्स जांच के लिए अमेरिका भेजा जाएगा है। क्रैश हुए बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान का ब्लैक बॉक्स क्रैश के अगले दिन ही रिकवर कर लिया गया था।विमान में आग लगने के बाद ब्लैक बॉक्स इतना डैमेज हो चुका है कि उससे डेटा रिकवर करना मुश्किल है। इसलिए उसे जांच के लिए अमेरिका भेजने का फैसला लिया गया है। अहमदाबाद में 12 जून को लंदन जाने वाली एअर इंडिया की फ्लाइट् ढ्ढ-171 उड़ान भरने के तुरंत बाद क्रैश हो गई थी। इसमें सवार 241 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि एक यात्री की जान बच गई थी। वहीं, इस घटना में कुल 270 लोग मारे गए थे।फ्लाइट नंबर् ढ्ढ-171 ने 12 जून को दोपहर 1.38 बजे उड़ान भरी और 1.40 बजे हादसा हो गया। उस समय प्लेन 200 फीट की ऊंचाई पर था।

ब्लैक बॉक्स के 2 हिस्से कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर (ष्टङ्कक्र) और फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर

(स्नष्ठक्र) को हीट और आग से नुकसान पहुंचा है। देश में ऐसी कोई लैब नहीं है, जहां डेटा रिकवर किया जा सके।

इसी वजह से अब इन्हें अमेरिका की नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड (हृञ्जस्क्च) की लैब में भेजने का फैसला किया गया है। इसके साथ सरकारी अफसर भी जाएंगे ताकि सुरक्षा और गोपनीयता बनी रहे।

इसे ब्लैक बॉक्स क्यों कहते हैं: %ब्लैक बॉक्स% नाम को लेकर कई बातें कही जाती हैं। एक मान्यता है कि पहले इसके अंदर का हिस्सा काला होता था, इसलिए इसे यह नाम मिला। दूसरी राय यह है कि हादसे के बाद आग से जलकर इसका रंग काला हो जाता है, इसलिए लोग इसे ÷ब्लैक बॉक्स÷ कहने लगे।

'विलंब के लिए जनप्रतिनिधियों को दोषी ठहराना गलत'

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल की महापौर मालती राय ने गुरुवार को नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय शुक्ला को लेटर लिखा। इनमें कहा गया है कि फाइलों के विलंब के लिए जनप्रतिनिधियों को दोषी ठहराना न

सिर्फ गरिमा के विरुद्ध है, बल्कि किसी भी स्थिति में उचित नहीं है। महापौर राय ने बताया, मेयर इन कौंसिल के लिए आदेश निकाला गया है कि 10 दिन की समय सीमा में फाइल का निराकरण करना रहेगा। इस पर प्रदेश के सभी महापौर ने आपत्ति दर्ज कराई है। जिसके लिए अपर मुख्य सचिव को यह पत्र लिखा है। महापौर राय ने लेटर में लिखा कि प्रदेश के सभी महापौर और अध्यक्ष चुने हुए जनप्रतिनिधि हैं। सभी महापौर अपने पदीय दायित्वों के निर्वाहन के लिए सचेत हैं और नगर पालिका निगम अधिनियम-1956 एवं इसके तहत बनाए गए सभी नियमों का ज्ञान रखते हैं। महापौर या एमआईसी को प्राप्त प्रकरणों का निराकरण यथासंभव शीघ्र और समय-सीमा में हो, इससे भी अवगत है। निकाय हित में एवं जनहित में प्रत्येक प्रकरण का समय-सीमा में निराकरण का ध्यान रखा जाता है।

जांच पैनल का प्रस्ताव जस्टिस वर्मा को हटाएं; 64 पेज की रिपोर्ट सामने आई

कैश केस-स्टोर रूम पर जज परिवार का ही कंट्रोल था

नई दिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस यशवंत वर्मा के घर से मिले कैश केस की जांच कर रहे पैनल की रिपोर्ट गुरुवार को सामने आई है। 64 पेज की रिपोर्ट में कहा गया है कि हाईकोर्ट जज यशवंत वर्मा और उनके परिवार के सदस्यों का स्टोर रूम पर सीक्रेट या एक्टिव कंट्रोल था। यहीं 14 मार्च की रात आग लगने के बाद बड़ी संख्या में अधजले नोट मिले थे।

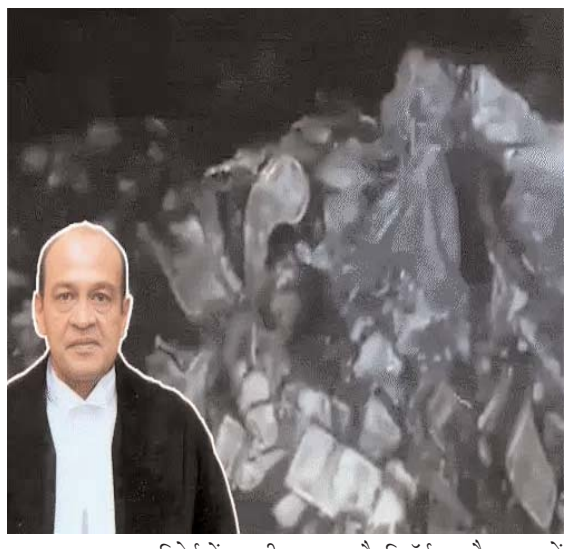

पैनल की रिपोर्ट में कहा गया है कि इससे जस्टिस वर्मा के बुरे व्यवहार का पता चलता है, जो इतना गंभीर है कि उन्हें हटाया जाना चाहिए। घटना के समय जस्टिस वर्मा दिल्ली हाईकोर्ट के जज थे और अब इलाहाबाद हाईकोर्ट में कार्यरत हैं।

पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस शील नागू की अध्यक्षता वाले तीन जजों के पैनल ने 10 दिनों तक जांच की। 55 गवाहों से पूछताछ की और जस्टिस वर्मा के आधिकारिक आवास का दौरा किया था।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है, रिकॉर्ड पर मौजूद सबूतों को ध्यान में रखते हुए समिति इस बात पर सहमत है कि ष्टछ्वढ्ढ के 22 मार्च के लेटर में लगाए गए आरोपों में पर्याप्त तथ्य हैं। आरोप इतने गंभीर हैं कि जस्टिस वर्मा को हटाने के लिए कार्यवाही शुरू करनी चाहिए।

नया पता- लुटियंस जोन का सुनहरी बाग

राहुल गांधी ने 55वें जन्मदिन पर शिफ्टिंग शुरू की; अभी मां सोनिया के घर में रहते हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी का 55वां जन्मदिन है। आज ही राहुल ने सुनहरी बाग रोड में बने टाइप-8 बंगले में अपना सामान शिफ्ट करना शुरू कर दिया है। यह बंगला उन्हें लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष होने के नाते आवंटित किया गया है। संसदीय आवास समिति ने उन्हें 5 सुनहरी बाग रोड, 7 मोतीलाल नेहरू मार्ग और 3 कृष्णा मेनन मार्ग बंगले का ऑप्शन दिया था। इसमें से राहुल ने सुनहरी बाग को चुना। राहुल अभी सोनिया गांधी के साथ 10 जनपथ में रहते हैं। 2023 में उन्होंने 12 तुगलक लेन का बंगला खाली किया था। जो 19 साल उनके पास था। लेकिन सांसदी जाने के बाद बंगला खाली करना पड़ा। न्यूज एजेंसी क्क्षढ्ढ के मुताबिक 21 जुलाई से शुरू होने वाले संसद के मानसून सत्र से कुछ दिन पहले राहुल गांधी उस बंगले में रहना शुरू कर देंगे।राहुल को जो बंगला मिला है वह लुटियंस जोन में है। यहां देश के कई बड़े राजनेताओं, मंत्रियों और जजों के बंगले होते हैं। यह बंगला पहले सीनियर कैबिनेट मंत्रियों या आयोग के

प्रमुखों को आवंटित होता रहा है।यह हाई सिक्योरिटी एरिया है। बंगले का क्षेत्रफल 2000 से 3000 वर्ग मीटर के करीब है। बंगले में 4 से 5 बड़े बेडरूम और ऑफिस शामिल हैं। मीटिंग हॉल, प्राइवेट लॉन, सुरक्षा कर्मी कक्ष, स्टाफ क्वार्टर और कार पार्किंग भी है।इसमें बड़ी बैठकें, मीडिया कॉन्फ्रेंस और राजनीतिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त जगह है, जो विपक्ष के नेता होने के नाते राहुल गांधी की जरूरतों के मुताबिक है। राहुल से पहले सुनहरी बाग में कर्नाटक भाजपा के नेता ए नारायणस्वामी रहते थे। वे 2021 से 2024 तक मोदी सरकार में सामाजिक न्याय राज्य मंत्री थे।

यात्रियों की सुरक्षा, एयर स्ट्रीप-रनवे का ध्यान रखना शामिल

केंद्र ने एयरपोर्ट डायरेक्टर्स को 5 निर्देश दिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। अहमदबाद विमान हादसा के बाद केंद्र सरकार एयरलाइंस के साथ ऑपरेशन से जुड़े मुद्दों पर रेगुलर मीटिंग करेगी। यह फैसला गुरुवार को नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू किंजरापु ने देश भर के सभी एयरपोर्ट डायरेक्टर्स के साथ मीटिंग में लिया।

नायडू ने सभी एयरपोर्ट डायरेक्टर्स को निर्देश दिया कि वे फ्लाइट्स के रीशेड्यूल होने पर यात्रियों के लिए जरूरी जमीनी तैयारियों और असिस्टेंट मेक्निज्म की समीक्षा करें। ये फैसला विशेष तौर से उन परिस्थितियों को लेकर है, जिनमें दुर्घटना के बाद की जांचें, मौसम में बदलाव, राजनीतिक-सैन्य और रणनीतिक कारण होते हैं।अहमदाबाद में 12 जून को लंदन जाने वाली एअर इंडिया की फ्लाइट् ढ्ढ-171 उड़ान भरने के तुरंत बाद क्रैश हो गई थी। इसमें सवार 241 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि एक यात्री की जान बच गई थी।

वहीं, इस घटना में कुल 275 लोग मारे गए थे।

सरकार ने 5 आदेश दिए: एयरलाइनों के साथ करीबी समन्वय बनाएं। जिससे यात्रियों की समस्याओं का तत्काल और मौके पर ही समाधान किया जा सके।

फ्लाइट में देरी या भीड़भाड़ की स्थिति में टर्मिनल्स पर भोजन, पीने का पानी और बैठने की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए।

यात्रियों की शिकायतों को दूर करने और महत्वपूर्ण स्थानों पर पर्याप्त कर्मचारियों की तैनाती आवश्यक है।

एयरपोर्ट डायरेक्टर्स को यात्रियों को हर संभव सहायता करने का निर्देश दिया गया है।

एयरपोर्ट के सुरक्षित और संरक्षित बनाए रखने के लिए एयरपोर्ट डायरेक्टर्स को पक्षियों और आवारा जानवरों को एयर स्ट्रीप या रनवे से दूर रखने पर काम करने को कहा गया।

मप्र सरकार के फाइनेंस मैनेजमेंट पर कसावट की तैयारी

भोपाल (एजेंसी)। ऑडिटर जनरल कार्यालय अब प्रदेश के सभी विभागों की ऑडिट आपत्तियों पर सीधी निगरानी करने की तैयारी में है। इसके जरिए फाइनेंस मैनेजमेंट पर कसावट लाई जाएगी और सरकार के खर्चों की मॉनिटरिंग की जाएगी। इसी के मद्देनजर प्रदेश में सोलह साल पुराने एक आदेश पर अब विभाग प्रमुखों को एक कमेटी बनाने के निर्देश दिए गए हैं। यह निर्देश ऑडिटर जनरल के पत्र के बाद वित्त विभाग ने सभी विभागाध्यक्षों और विभागों के अपर मुख्य सचिवों को दिए हैं। वित्त विभाग द्वारा निर्देश में कहा गया है कि आडिट आपत्तियों की जांच के लिए कमेटी गठन करने का निर्देश 2009 में दिया गया था।

उसके आधार पर कमेटी का गठन किया जाए और अगर गठन की स्थिति नहीं है तो इसकी जानकारी ऑडिटर जनरल को दी जाए। इसके साथ ही वित्त विभाग के साफ्टवेयर से भी ऑडिटर जनरल कार्यालय को सीधे जोड़ने की तैयारी की जा रही है। दरअसल महालेखाकार ने 11 मई 2025 को प्रदेश के 14 चयनित विभागों के लिए शासन स्तर पर एंट्री कॉन्फ्रेंस को लेकर पत्र लिखा था। अपर मुख्य सचिव (वित्त) को लिखे पत्र में 15 मई से 23 मई तक 14 चयनित विभागों का सम्मेलन कराने का फैसला किया गया। इसमें जिन मुद्दों पर चर्चा की गई, उनमें से एक मामला ग्वालियर के ऑडिटर जनरल के वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारियों और विभागों के अपर मुख्य सचिव, निजी सचिव, विभागाध्यक्षों और वित्त विभाग के अफसरों के बीच को आर्डिनेशन से संबंधित था। इसके बाद इन विभागों की लेखा परीक्षा समितियों में वित्त विभाग के प्रतिनिधियों को नॉमिनेट करने के लिए कहा गया है।

समन्वित प्रयासों से भोपाल की यातायात व्यवस्था होगी और अधिक सुगम

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल की यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के उद्देश्य से जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभागार में एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में भोपाल के सांसद श्री आलोक शर्मा, कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, पुलिस आयुक्त श्री हरिनारायणा चारी मिश्र सहित नगरीय पुलिस, यातायात, नगर निगम और राजस्व विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में विशेष रूप से ई-रिक्शा संचालन की प्रक्रिया पर चर्चा की गई। ई-रिक्शा को व्यवस्थित करने के लिए उनके निर्धारित रूट तय करने और संचालन व्यवस्था सुधारने के निर्देश दिए गए। इसके साथ ही शहर के प्रमुख मार्गों और सार्वजनिक स्थलों पर अतिक्रमण हटाने हेतु नगर निगम एवं यातायात पुलिस का संयुक्त दस्ता तैयार कर अभियान चलाने पर सहमति बनी। बैठक में यह भी तय किया गया कि 20 जून 2025 से सार्वजनिक स्थलों और सड़कों पर खड़े यातायात बाधित करने वाले वाहनों पर सख्त कार्यवाही की जाएगी। नागरिकों से अपील की गई है कि वे अपने वाहन निर्धारित पार्किंग में ही खड़े करें। शहर के ट्रैफिक को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न चौराहों और तिराहों पर 'लेफ्ट टर्न क्लियर' करने की योजना बनाई जाएगी, जिसके लिए सभी विभागों के सहयोग से कार्ययोजना तैयार की जा रही है। पुलिस आयुक्त कार्यालय भोपाल ने आमजन से अपील की है कि वे यातायात नियमों का पालन करें और अपने वाहनों में प्रतिबंधित उपकरणों का प्रयोग न करें। किसी भी असुविधा की स्थिति में यातायात नियंत्रण कक्ष के दूरभाष क्रमांक 0755-2677340, 2443850 पर संपर्क किया जा सकता है।

प्रदेश स्तरीय गो-शाला सम्मेलन 20 जून को

भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश स्तरीय गो-शाला सम्मेलन का आयोजन 20 जून शुक्रवार को दोपहर 12 बजे से मुख्यमंत्री निवास प्रांगण भोपाल में किया जायेगा। सम्मेलन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तथा पशुपालन एवं डेयरी विकास राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार श्री लखन पटेल शामिल होंगे। सम्मेलन में प्रदेश के समस्त जिलों से शासकीय एवं अशासकीय गो-शाला संचालकों एवं प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया है। प्रमुख सचिव पशुपालन एवं डेयरी श्री उमाकांत उमराव ने बताया कि सम्मेलन में गो-शालाओं में गोवंश के व्यवस्थापन के लिए लगभग 90 करोड़ रूपये की राशि अंतरित की जाएगी। आचार्य विद्यासागर जीव दया गो-सेवा सम्मान योजना के अंतर्गत चयनित गो-शालाओं एवं संस्थाओं को गो-सेवा पुरूस्कार प्रदान किए जायेंगे। साथ ही डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना के हितग्राहियों को हितलाभ वितरण किया जाएगा। सम्मेलन में नवीन गो-शालाओं को पंजीयन प्रमाण पत्र तथा म.प्र.गो-संवर्धन बोर्ड एवं दयोदय महासंघ के सहयोग से हितग्राहियों को ट्रेक्टर ट्राली वितरण भी किया जाएगा। पशुपालन के क्षेत्र में प्रदेश के बढ़ते कदम विषय पर एक लघु फिल्म का प्रदर्शन भी होगा।

पुल बोगदा पर बेरिकेडिंग, ट्रैफिक डायवर्ट

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के पुल बोगदा का रास्ता पूरी तरह से बंद कर दिया गया। मेट्रो कॉर्पोरेशन ने यहां बेरिकेडिंग की है। अब वाहन दूसरे रास्तों से ही गुजरेंगे। हालांकि 20 दिन पहले ही रास्ते को वन-वे कर दिया गया था, लेकिन अब कोई भी वाहन इधर से उधर नहीं आ-जा सकेंगे। सुभाषनगर से करोंद तक मेट्रो की ऑरेंज लाइन का दूसरा फेज का काम चल रहा है। पुल बोगदा के पास ही पिलर्स बनेंगे। इस काम के चलते ही ट्रैफिक को डायवर्ट करना पड़ा है। ऐसे में पुल बोगदा होकर भारत टॉकीज और जिंसी की ओर जाने वाले मार्गों पर वाहनों के प्रवेश पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया है। भारी, मध्यम और बस जैसे बड़े वाहन अब प्रभात चौराहा से भारत टॉकीज या प्लेटफॉर्म नंबर-6 की ओर जाने के लिए परिहार चौराहा (अशोका गार्डन), 80 फीट रोड, स्टेशन बजरिया तिराहा और भारत टॉकीज ओवरब्रिज होते हुए संगम टॉकीज तिराहा से गुजरेंगे।

विभागीय अधिकारी बांधों का निरीक्षण कर वर्षा पूर्व सुधार कार्य पूर्ण करें

भोपाल (एजेंसी)। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने निर्देश दिए हैं कि विभागीय अधिकारी वर्षा से पूर्व सभी बांधों का निरीक्षण करें एवं आवश्यकतानुसार सुधार कार्य वर्षा से पहले ही कर लिए जाएं। सभी बांधो के गेट्स का मेंटेनेंस कर उन्हें क्रियाशील स्थिति में रखा जाए। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसी सिलावट ने मंगलवार को मंत्रालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विभागीय कार्यों की समीक्षा बैठक की। बैठक में अपर मुख्य सचिव श्री राजेश राजोरा ,प्रमुख अभियंता श्री विनोद कुमार देवड़ा आदि उपस्थित थे। क्षेत्रीय अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सम्मिलित हुए। बैठक में आगामी मानसून पूर्व तैयारियों एवं विभाग द्वारा संचालित जल गंगा संवर्धन कार्यक्रम की समीक्षा की गई। प्रमुख अभियंता श्री विनोद देवड़ा द्वारा वर्षा ऋतु से पूर्व बांधों की सुरक्षा और संभावित आपदा

स्थितियों से निपटने हेतु विभागीय योजना एवं विभाग द्वारा किए गए जल संरक्षण कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुतीकरण के माध्यम से दी गई।

जल संसाधन मंत्री श्री सिलावट ने निर्देश दिए कि जिला स्तर पर बाढ़ नियंत्रण कक्ष स्थापित कर 24 घंटे कार्य करना सुनिश्चित किया जाए। निरीक्षण दल गठित कर नियमित मॉनिटरिंग हो और वर्षा काल के दौरान कोई भी अधिकारी बगैर सक्षम अधिकारी की अनुमति के मुख्यालय न छोड़े। जल संसाधन मंत्री श्री सिलावट ने निर्देश दिए कि वर्षा से पूर्व जिले के सभी अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और अन्य महत्वपूर्ण संस्थाओं को डैम से पानी छोड़ने की अग्रिम सूचना दे दी जाए। जिन स्थानों पर पानी छोड़ा जा रहा है वहां जन सामान्य को पर्याप्त समय पूर्व पानी छोड़ने की सूचना अनिवार रूप से दी जाए. विभागीय मैन्युअल के अनुसार वर्षा पूर्व निरीक्षण प्रतिवेदन विभागीय पोर्टल पर दर्ज किए जाएं और भारत सरकार द्वारा लागू डैम सेफ्टी एक्ट के अंतर्गत चिन्हित राज्यों के बांधों से संबंधित प्रतिवेदन भी समय पर भारत सरकार के पोर्टल पर दर्ज किए जाएं।

मंत्री श्री सिलावट ने निर्देश दिए कि विभाग द्वारा संचालित जल गंगा संवर्धन कार्यक्रम को आगामी 14 दिनों में पूर्ण गति से क्रियान्वित किया जाए और कार्यक्रम की समाप्ति के 3 दिवस पश्चात विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए। श्री सिलावट ने निर्माणाधीन परियोजनाओं की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और वर्षा पूर्व अधिकतम कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए।

बिना परमिट और फिटनेस के दौड़ती मिली स्कूल बसें

भोपाल (एजेंसी)। शहर में स्कूली बच्चों की सुरक्षा को लेकर आरटीओ जितेंद्र शर्मा के निर्देशन में मंगलवार को विशेष चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान नियमों को ताक पर रखकर दौड़ रहीं स्कूल बसों पर बड़ी कार्रवाई की गई। जांच के दौरान 6 स्कूली बसें ऐसी पाई गईं, जो बिना फिटनेस और परमिट के संचालित हो रही थीं।

इन सभी बसों को जब्त कर आरटीओ कार्यालय में निराकरण के लिए खड़ा किया है। इसके अलावा 3 अन्य स्कूली वाहन ओवरलोडिंग और बिना बीमा के चलते पकड़े गए। इन पर कुल 16 हजार रुपए का जुर्माना लगाया है। पकड़ी गई बसों में सेंट मोंटफोर्ड स्कूल, जवाहर स्कूल और कुछ अन्य स्कूलों के छात्र बैठे थे। बिना

फिटनेस और बीमा के चल रही बसें बच्चों की जान के साथ गंभीर खिलवाड़ हैं। ऐसे वाहनों पर सख्त कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी।

आरटीओ जितेंद्र शर्मा ने यह भी स्पष्ट किया कि स्कूल वाहनों की नियमित जांच की जाएगी और जो भी वाहन सुरक्षा मानकों पर खरे नहीं उतरेंगे, उन्हें सीज कर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। वहीं, अभिभावकों से भी अपील की गई है कि वे बच्चों को भेजने से पहले यह सुनिश्चित करें कि वाहन पूरी तरह वैध और सुरक्षित है।

एपीसी बोले खाद का वितरण पीएसएस मशीन से कराएं

भोपाल (एजेंसी)। कृषि उत्पादन आयुक्त (एग्रीकल्चर प्रोडक्शन कमिश्नर) अशोक बर्णवाल ने कहा है कि प्रदेश के हर जिले में कृषि और उद्यानिकी की विशिष्ट फसलों के लिए एक हजार हेक्टेयर का क्लस्टर बनाएं। किसी फसल का जब बड़े पैमाने पर उत्पादन होगा तो उसे खरीदने और प्रोसेस करने वाले आसानी से मिल जाएंगे। फल, सब्जी, मसाला तथा फूल की खेती को इसमें प्राथमिकता दें। प्रदेश की अर्थव्यवस्था में 46 प्रतिशत योगदान कृषि और उससे जुड़े विभागों का है। किसान को जिस दिन फसल से अधिक लाभ मिलेगा तो वह स्वयं नई फसल को अपना लेगा। कृषि उत्पादन आयुक्त बर्णवाल ने ये बातें रीवा और शहडोल संभाग के कृषि और राजस्व अफसरों की बैठक में कहीं। उन्होंने कहा कि गेहूं और धान की फसल की तुलना में दलहन और तिलहन में लाभ अधिक है। इसलिए रीवा और शहडोल दोनों संभागों में अरहर के क्षेत्र विस्तार के लिए विशेष प्रयास करें। इसमें लागत कम और लाभ अधिक है। बर्णवाल ने कहा कि खेती के साथ-साथ उद्यानिकी, पशुपालन, मछली पालन जैसे व्यवसाय अपनाकर ही खेती को लाभदायक बनाया जा सकता है। हर विकास खण्ड में मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला शुरू कराएं।

कृषि उत्पादन आयुक्त ने कहा कि दोनों संभागों में किसानों ने डीएपी के स्थान पर एसएसपी और एनपीके खाद को तेजी से अपनाया है। जिसके कारण डीएपी का संकट होने की आशंका नहीं है। खाद का वितरण पीओएस मशीन माध्यम से ही कराएं।

नरवाई जलाने की घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए एपीसी बर्णवाल ने कहा कि संभाग के सभी जिलों में बायो एनर्जी प्लांट लगाए जा रहे हैं। इन्हें चलाने के लिए फसल अवशेषों की आवश्यकता होगी। कंपनियां किसानों से निर्धारित राशि देकर पराली तथा अन्य फसल अवशेष खरीदेंगी।

बेलर मशीन, सुपर सीडर और हैप्पी सीडर के उपयोग से भी नरवाई प्रबंधन करें। बैठक में अपर मुख्य सचिव उद्यानिकी अनुपम राजन, प्रमुख सचिव मछली पालन निधि निवेदिता, कमिश्नर रीवा बीएस जामोद, प्रबंध संचालक मार्फेड आलोक सिंह, आयुक्त उद्यानिकी प्रीति मैथिल, आयुक्त शहडोल संभाग सुरभि गुप्ता, आयुक्त सहकारिता मनोज पुष्प, प्रबंध संचालक मण्डी बोर्ड कुमार पुरुषोत्तम, जिलों के कलेक्टर, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा संबंधित विभागों के संभागीय एवं जिलाधिकारी उपस्थित रहे।

ग्राम पडारिया काछी भोपाल में नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन

भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में जिला भोपाल स्थित आदमपुर खंती में लगी आग के धुंए से होने वाले वायु एवं जल प्रदूषण से प्रभावित लोगों के स्वास्थ्य को दृष्टिगत जिला विधिक सेवा प्राधिकरण,भोपाल एवं जिला जयप्रकाश चिकित्सालय के समन्वय से बुधवार को नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का अयोजन जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री सुनीत अग्रवाल एवं जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री बी.एम. सिंह की उपस्थिति में किया गया। परीक्षण शिविर में जिला चिकित्सालय के डॉक्टर्स, सर्जन, पैरामेडीकल एवं नर्सिंग स्टॉफ उपस्थित थे। स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में उपस्थित ग्रामीणों के

स्वास्थ्य परीक्षण के साथ-साथ नि:शुल्क दवाईयां भी वितरित की गई। यह शिविर आस-पास के समस्त प्रदूषण से प्रभावित व्यक्तियों के स्वास्थ्य जांच हेतु 18 जून से 24 जून 2025 तक निरंतर आयोजित किया जाएगा। श्री सुनीत अग्रवाल द्वारा अपील की गई कि अधिक से अधिक ग्रामीणजन स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का लाभ लें।

फ्लाइट कैंसिल की पर भोपाल तक पहुंचने के लिए व्यवस्था नहीं की, इंडिगो पर 17, 500 रुपए का हर्जाना

भोपाल (एजेंसी)। फ्लाइट कैंसिल करने के बाद यात्री को घर तक पहुंचाने की समुचित व्यवस्था नहीं करना इंडिगो एयरलाइंस को भारी पड़ा है। भोपाल जिला उपभोक्ता फोरम ने एयरलाइंस पर 17,500 रुपए का हर्जाना लगाया है। साथ ही, मेक माई ट्रिप पर भी 5,000 रुपए का जुर्माना ठोका गया है, जिसने रिफंड में से सेवा शुल्क काट लिया था। यह मामला भोपाल के बोर्ड ऑफिस क्षेत्र में रहने वाले यात्री आशुतोष शुक्ला का है। उनकी ओर से सीनियर एडवोकेट दीपेश जोशी ने पैरवी की। आशुतोष ने 25 फरवरी 2024 को भोपाल से रायपुर और वापसी में 29 फरवरी को रायपुर से भोपाल की टिकट इंडिगो एयरलाइंस से बुक कराई थी। रायपुर से भोपाल लौटते समय तकनीकी खराबी के कारण रास्ते से ही फ्लाइट वापस रायपुर एयरपोर्ट लौटा दी गई और बाद में उसे रद्द कर दिया गया। इसके बाद इंडिगो ने यात्रियों को अगली सुबह रायपुर से इंदौर की फ्लाइट देने का विकल्प दिया, जिसके बाद इंदौर एयरपोर्ट से टैक्सी के माध्यम से भोपाल छोड़ने की बात कही गई। आशुतोष समेत 11 यात्रियों ने यह विकल्प चुना। फोरम ने इस मामले में दोनों कंपनियों को दोषी पाया। इंडिगो एयरलाइंस को आदेश दिया गया

सिंहस्थ-2028 सुपरविजन कमेटी ने 25 कामों को दी मंजूरी

भोपाल (एजेंसी)। मुख्य सचिव अनुराग जैन ने बुधवार को मंत्रालय में सिंहस्थ-2028 की तैयारियों के लिए करीब 40 कामों को मंजूरी दी है। इसमें उज्जैन और आस-पास के जिलों के काम भी शामिल हैं। जो आगामी सिंहस्थ को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा कराए जाने वाले हैं।

स्टेट सुपरविजन कमेटी की इस बैठक में उज्जैन समेत सभी संबंधित जिलों के कलेक्टर और अन्य विभागीय प्रमुख मौजूद रहे हैं। सीएस ने सभी कामों को पारदर्शिता के साथ समय सीमा में पूरा कराने के लिए कहा है। सीएस ने कहा है कि जो भी काम हो रहे हैं, उनकी डिजाइन सही हो। सड़कों को लेकर सीएस जैन ने कहा कि

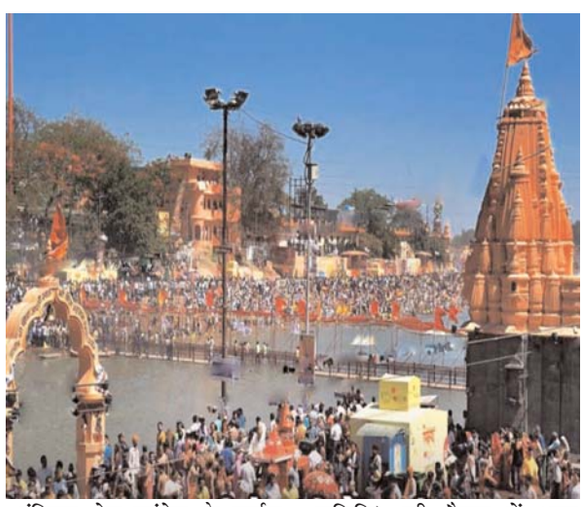

इंडियन रोड कांग्रेस के नार्म्स का पालन गंभीरता से कराया जाए।

सिंहस्थ के कामों की सुपरविजन कमेटी (पर्यवेक्षण समिति) की बैठक में आज सबसे अधिक उज्जैन जिले के 25 कामों को मंजूरी दी गई है। इसमें उज्जैन सिंहस्थ मेला क्षेत्र, घाट क्षेत्र के कामों के अलावा मौजूद घाट रामघाट व अन्य के डेवलपमेंट के काम शामिल हैं।

यहां नौ किमी तक अपग्रेडेशन का काम किया जाएगा। इसके साथ ही उज्जैन की रीगल टॉकीज के रीडेंसीफिकेशन प्लान को भी सीएस जैन और कमेटी ने मंजूरी दी है। उज्जैन के अलावा बाकी अन्य जिलों के मिलाकर करीब 40 काम स्वीकृत किए गए हैं और टाइम लिमिट का ध्यान रखते हुए हर काम कराने को कहा गया है। सिंहस्थ के कामों को लेकर मंत्रालय में मंगलवार को भी बैठक हुई थी। आज सीएस के समक्ष सिंहस्थ के 100 कामों को लेकर प्रजेंटेशन होना था जिसके लिए सभी संबंधित विभागों के अधिकारी पहुंचे थे।

सिकल सेल जांच एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

भोपाल (एजेंसी)। विश्व सेल दिवस के अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय भोपाल द्वारा आरकेडीएफ यूनिवर्सिटी में एनसीसी कैडेट्स के लिए विशेष स्क्रीनिंग एवं जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। शिविर में सिकल सेल एवं हीमोफिलिया रोग की जांच के साथ साथ कैडेट्स का सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया। शिविर में 162 कैडेट्स ने स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया। शिविर आयोजन में एनसीसी निदेशालय मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के नोडल अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ. चंद्र बहादुर सिंह दांगी द्वारा विशेष रूप से सहयोग दिया गया।

शिविर के अवसर पर आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में जानकारी दी गई कि सिकल सेल के प्रसार को रोकने के लिए वैवाहिक संबंध जेनेटिक

कार्ड के मिलान के बाद किया जाना बेहद जरूरी है। समय पर चिन्हांकन, जेनेटिक कॉउंसलिंग, वाहक और पीड़ित की ट्रेकिंग कर बीमारी के प्रसार को कम किया जा सकता है। सिकल सेल एनीमिया एक अनुवांशिक बीमारी है जो कि माता-पिता से बच्चों में पहुंचती है। यह भारत की जनजातीय आबादी में अधिक पाया जाता है, लेकिन अन्य समुदायों में भी यह बीमारी देखने को मिलती है। इस बीमारी में शरीर के अंगों में दर्द, शारीरिक विकास में कमी एवं खून की कमी मुख्य लक्षण है। यह बीमारी फेफड़े, हृदय, गुर्दे, आंखों, हड्डियों और मस्तिष्क जैसे कई अंगों को भी प्रभावित करती है। यह जनजातीय समूहों, विशेष रूप से मलेरिया बहुल क्षेत्र में रहने वाले लोगों में व्यापक रूप से पाया जाता है। जनजातीय आबादी में जन्म लेने वाले 86 में से लगभग 1 को सिकल सेल रोग की संभावना होती है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनीष शर्मा ने बताया कि सिकल सेल रोग में लाल रक्त कोशिकाएं अर्धचंद्राकार या सिकल आकार की हो जाती है।इससे ऑक्सीजन प्रवाहित होता है और व्यक्ति को तीव्र दर्द, संक्रमण व अंग क्षति जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। जिले के आँगनवाड़ी केंद्रों, स्कूल, कॉलेज में सिकल सेल रोग का चिन्हांकन किया जा रहा है। विशेष रूप से आदिवासी हॉस्टल्स और स्कूल्स में स्क्रीनिंग का कार्य किया जा रहा है। नवजात शिशुओं की 72 घंटे के भीतर होने वाली जाँच की सुविधा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में उपलब्ध है।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कोलार का निरीक्षण कर देखी स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति

भोपाल (एजेंसी)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ.मनीष शर्मा द्वारा जिले की विभिन्न स्वास्थ्य संस्थाओं के निरीक्षण निरंतर किया जा रहे हैं। बुधवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण किया गया। इस दौरान ओपीडी, भर्ती रोग इकाई, लेबर रूम मैटरनिटी ओटी, पीएनसी वार्ड, पोषण पुनर्वास केंद्र, नवजात शिशु स्टेबलाइजिंग यूनिट का अवलोकन किया गया। निरीक्षण के दौरान संस्था के रिकार्ड्स की जांच की गई। दवाइयां के इंडेंट एवं स्टॉक की स्थिति, कोल्ड चैन मैनेजमेंट का अवलोकन किया गया।सीएमएचओ ने अस्पताल में स्थापित डेढ़ सौ एलपीएम के ऑक्सीजन प्लांट के संचालन और ऑक्सीजन की बिस्तरों तक सप्लाई की जानकारी भी ली। निरीक्षण के दौरान

सीएमएचओ डॉ. शर्मा ने निर्देश दिए कि अस्पताल में 24 घंटे सिजेरियन प्रसव की सुविधा उपलब्ध रहे। माह में एक बार महिला एवं बाल विकास विभाग के स्थानीय अधिकारियों के साथ बैठक कर कुपोषित बच्चों की जानकारी लेकर उन्हें उपचार के लिए पोषण पुनर्वास केंद्र में भर्ती करवाया जाए।

उच्च शिक्षा संस्थानों में 5 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने प्रवेश के लिए कराया पंजीयन

भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा विभाग अंतर्गत महाविद्यालयों में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं एनसीटीई पाठ्यक्रमों में सत्र 2025-26 की प्रवेश प्रक्रिया के प्रथम चरण में अब तक लगभग 1 लाख 33 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश प्राप्त किया है। इनमें एनसीटीई पाठ्यक्रमों में लगभग 14 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश प्राप्त किया है।स्नातक के लिए लगभग 90 हजार एवं स्नातकोत्तर के लिए लगभग 30 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश शुल्क जमा कर दिया है। कुल 1 लाख 20 हजार विद्यार्थियों ने उच्च शिक्षा संस्थानों में अपना प्रवेश शुल्क जमा कर दिया है।उच्च शिक्षा विभाग अंतर्गत पिछले वर्ष सत्र 2024- 25 प्रथम चरण में स्नातक एवं स्नातकोत्तर में 96 हजार विद्यार्थियों एवं एनसीटीई पाठ्यक्रमों में लगभग 11 हजार, इस प्रकार कुल 1 लाख 7 हजार विद्यार्थियों ने उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश प्राप्त किया था। पिछले वर्ष की तुलना में सभी पाठ्यक्रमों में प्रथम चरण में प्रवेश संख्या में वृद्धि हुई है।द्वितीय चरण के पंजीयन के लिए बुधवार अंतिम तिथि थी, पंजीयन के अंतिम दिन शाम 6 बजे तक लगभग एक लाख विद्यार्थियों ने पंजीयन कर लिया है।

राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी ने सुनी आमजनों की समस्यायें

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने गुरूवार को विधानसभा क्षेत्र कार्यालय सतना में आयोजित जनता दरबार में जिले की आम जनता एवं अन्य गणमान्य नागरिक द्वारा प्रस्तुत की गई समस्याओं से रूबरू हुईं। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी द्वारा समस्याओं का निराकरण विभिन्न विभाग से आये अधिकारियों द्वारा कराया गया और जिन समस्याओं का निराकरण शासन स्तर पर किया जाना है। उसके लिये प्रतिवेदन तैयार करने के निर्देश दिये गए।

राज्यमंत्री ने सुनी बिजली से संबंधित समस्यायें: नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी द्वारा गुरूवार को विधानसभा क्षेत्र की ग्राम पंचायत रैगांव के मीटिंग हाल में विद्युत समस्या निवारण शिविर आयोजित किया गया है। शिविर में क्षेत्रवासियों ने राज्यमंत्री को बिजली संबंधी समस्यायें बताई। उन्होंने स्थल पर ही ग्रामवासियों की बिजली संबंधी समस्याओं का त्वरित निराकरण कराया। राज्यमंत्री ने कहा कि जनसुनवाई से समाधान, यही हमारी कार्यशैली है। जनता की समस्या का समाधान ही हमारी सेवा का संकल्प है। इस मौके पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, विद्युत विभाग के अधिकारी-कर्मचारी तथा ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

एनीमिया के प्रति जागरूकता फैलाने रवाना हुआ जागरूकता रथ

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)।जिले में एनीमिया जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्या को जड़ से समाप्त करने एवं जनमानस को इसके दुष्प्रभावों से अवगत कराने के उद्देश्य से आज एक महत्वपूर्ण पहल की गई। जिला चिकित्सालय परिसर स्थित डीईआईसी से मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ बबिता खरे, डीआईओ डॉ नागेंद्र बिहारी दुबे एवं जिला कार्यक्र म प्रबंधक पुष्पेंद्र शुक्ला द्वारा एनीमिया जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। यह जागरूकता रथ जिले के सभी ब्लॉकों में भ्रमण करेगा तथा आंगनवाड़ी केन्द्रों एवं विद्यालयों में पहुंचकर बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों को एनीमिया के बारे में जानकारी देगा। यह रथ न सिर्फ एनीमिया के कारण एवं दुष्परिणाम बताएगा, बल्कि इससे बचाव के लिए आयरन फोलिक एसिड अनुपूरण के महत्व को भी समझाएगा। विशेष रूप से यह रथ उन स्थानों पर जाकर जानकारी देगा जहाँ आयरन की खुराक बच्चों को नियमित रूप से दी जाती है।बताया गया कि आँगनवाड़ी केन्द्रों में हर मंगलवार एवं शुक्रवार को आयरन सिरप पिलाया जाता है। विद्यालयों में, कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों को गुलाबी आयरन गोली, एवं कक्षा 6 से 12 तक के बच्चों को नीली आयरन गोली प्रदान की जाती है।

शिल्पी प्लाजा रीवा में कपड़ों के शोरूम में चोरी, ग्राहक बनकर आये थे आरोपी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर के सिविल लाइन थाना क्षेत्र स्थित शिल्पी प्लाजा में संचालित कपड़ों के शोरूम में ग्राहक बनकर पहुंचे दो युवकों द्वारा काउंटर में रखे कैश चोरी किए जाने का मामला सामने आया है। घटना के संबंध में बताया गया है कि बुधवार की दोपहर दो व्यक्ति ग्राहक बनकर दुकान पहुंचे और दोनों युवकों में एक ने कपड़े खरीदने के बहाने कर्मचारी को व्यस्त कर लिया, जबकि दूसरे ने 500 का चेंज लेने के बहाने काउंटर में बैठी लड़की को झांसा देकर काउंटर से तकरीबन 18 हजार रुपये पार कर दिए। इस घटना की जानकारी उस वक्त हुई जब काउंटर में रखे कैश की गिनती हुई, जिनमें 18 हजार रुपये कम थे। ऐसे में सीसीटीवी फुटेज चेक करने पर चोरी की घटना का खुलासा हुआ। जिसके बाद गुरुवार को दुकान के कर्मचारियों ने सिविल लाइन थाने शिकायत दर्ज कराई है। घटना की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज का जांच शुरू कर दी है।

रीवा में पुलिस को कार में मिली 710 शीशी कफ सिरप, आरोपी फरार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले की सेमरिया पुलिस ने फोर व्हीलर वाहन सहित 710 शीशी नशीली कप सिरप ज़प्त की है। [ड्डस्रस्र] जबकि आरोपी वाहन छोड़कर फरार हो गए हैं। जानकारी के मुताबिक पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर कार का पीछा किया, इस दौरान खरहरी गांव में टमस नदी पुल के पास तस्कर वाहन को छोड़कर भाग निकले। कार की तलाशी लेने पर तीन बोरियों में 710 शीशी नशीली सिरप मिली हैं। जिसकी अनुमानित कीमत 1 लाख 27 हजार 800 है।

वर्षा पूर्व तैयारियों का निगमायुक्त ने वार्ड में जाकर लिया जायजा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नगर निगम आयुक्त डॉ. सौरभ सोनवणे द्वारा वर्षा ऋतु से पूर्व तैयारियों के अंतर्गत वार्डों का सतत भ्रमण किया जा रहा है। जिसके तहत गुरुवार को निगमायुक्त ने बोदाबाग इलाके में निरीक्षण किया। इस दौरान शिव नगर में जलभराव, नाली एवं सड़क की समस्या को देखते हुए समाधान के लिए संबंधित अमले को निर्देश दिए। सीवरेज कार्यों के कारण मार्गों की स्थिति पर संज्ञान लेते हुए आयुक्त ने निर्देश दिए कि जहां भी सीवरेज का कार्य हुआ है, वहां तत्काल टीम लगाकर सड़क को मार्टेबल किया जाए। कायाकल्प योजना के तहत चल रहे निर्माण कार्यों को शीघ्रता से पूर्ण करने के निर्देश भी दिए गए।

रीवा में फंदे से लटका मिला महिला का शव, पिता बोले- बेटी की हुई हत्या

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के पनवार थाना क्षेत्र के कल्याणपुर में 22 वर्षीय कोमल देवी का शव फांसी पर लटता मिला, जिससे हड़कंप मच गया। मायके वालों ने हत्या का आरोप लगाया है, जबकि पति का कहना है कि पत्नी ने आत्महत्या की है। जानकारी के मुताबिक लूक गांव की रहने वाली कोमल की शादी 2022 में कल्याणपुर के पिंटू चर्मकार से हुई थी, शुरू में सब ठीक था, लेकिन कुछ समय बाद पति-पत्नी में झगड़े होने शुरू हो गए। कोमल के पिता ने आरोप लगाया कि उनकी बेटी आत्महत्या नहीं कर सकती, उसकी हत्या की गई है। घटना को लेकर एएसपी विवेक लाल ने बताया ??? कि पनवार थाना क्षेत्र में एक अन-नेचुरल डेथ का मामला सामने आया है, जांच लगातार जारी है, आगे आने वाले तथ्यों के आधार पर वैधानिक कार्यवाही की जाएगी।

जर्जर भवनों में कक्षाएं संचालित पाए जाने पर होगी कार्यवाही

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। स्कूल शिक्षा विभाग ने जर्जर स्कूल भवनों में कक्षाओं का संचालन नहीं करने के निर्देश जारी किए हैं। [22] साथ ही चेतावनी दी है कि यदि किसी भी स्थिति में जर्जर भवनों में कक्षाएं संचालित पाई जाती हैं और कोई हादसा होता है तो उस स्कूल के शिक्षक से लेकर डीईओ तक की जवाबदेही तय की जाएगी। इस संबंध में लोक शिक्षण के संयुक्त संचालक नीरव दीक्षित ने रीवा, सतना, सीधी और सिंगरौली जिलों के जिला शिक्षा अधिकारियों और परियोजना समन्वयकों को पत्र लिखकर ऐसे स्कूलों का चयन करने का निर्देश दिया है जिनके भवन जर्जर हालत में हैं। साथ ही कक्षाओं के संचालन के लिए वैकल्पिक व्यवस्थाएं भी अधिकारियों को बनाने के लिए निर्देशित किया गया है। बीते साल गढ़ कस्बे में एक निजी विद्यालय के पास ही जर्जर भवन का स्ट्रक्चर था। जिसके गिरने से चार बच्चों की दबकर मौत हो गई थी।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए मानस भवन में हुआ विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीधी के अध्यक्ष श्री प्रयाग लाल दिनकर के मार्गदर्शन में प्रथम जिला न्यायाधीश श्री राकेश कुमार सोनी, तृतीय जिला न्यायाधीश श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री मुकेश कुमार शिवहरे द्वारा विश्व वृद्धजन दुर्व्यवहार जागरूकता के अवसर पर दिनांक 18.06.2025 को मानस भवन जिला सीधी में विधिक जागरूकता एवं साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया।

उक्त शिविर में प्रथम जिला न्यायाधीश श्री राकेश कुमार सोनी द्वारा वरिष्ठ नागरिकों के अधिकार, वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा, वरिष्ठ नागरिकों के लिए विधिक सेवा योजना 2015 के संबंध में जानकारी दी। तृतीय जिला न्यायाधीश श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा ने बताया कि यदि किसी वरिष्ठ नागरिक के साथ दुर्व्यवहार, संपत्ति में धोखाधड़ी या उपेक्षा होती है तो वे निःशुल्क विधिक सहायता प्राप्त कर सकते है। श्री शर्मा ने वृद्धजनों के लिए पेंशन, भरण-पोषण तथा अन्य कल्याणकारी योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री मुकेश कुमार शिवहरे ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए विधिक सहायता योजना, नालसा हेल्पलाईन नं 15100, तस्करी और वाणिज्यिक यौन शोषण पीड़ितो के विधिक सेवा योजना, नालसा नशा पीड़ितों को विधिक सेवाएं एवं नशा उन्मूलन के लिए विधिक सेवाए योजना 2015 के संबंध में जानकारी दी। साथ ही यह भी बताया कि यदि आपके आस-पास कोई वरिष्ठ नागरिक शारीरिक, मानसिक या आर्थिक शोषण का शिकार है तो तुरंत निकटतम पुलिस स्टेशन व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से संपर्क करें। परिवार और समुदाय में वृद्धों को सम्मानजनक जीवन देने का संकल्प ले।

"वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान-समय की आवश्यकता"

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)।मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीधी के अध्यक्ष श्री प्रयाग लाल दिनकर के मार्गदर्शन में श्री मनीष कौशिक जिला विधिक सहायता अधिकारी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीधी द्वारा विश्व वृद्धजन दुर्व्यवहार जागरूकता के अवसर पर दिनांक 18.06.2025 को नगर पंचायत चुरहट जिला सीधी में विधिक जागरूकता एवं साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया।

उक्त शिविर में श्री मनीष कौशिक जिला विधिक सहायता अधिकारी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीधी ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए विधिक सहायता योजना, नालसा हेल्पलाईन नं 15100 एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संचालित निःशुल्क विधिक सहायता योजना, वृद्धजनों के लिए पेंशन, भरण-पोषण तथा अन्य कल्याणकारी योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। श्री कौशिक ने सभी वरिष्ठ नागरिकों से आग्रह किया कि वे इन योजनाओं का लाभ उठाए और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहे। श्री अरविन्द कुमार पटेल पैरालीगल वॉलेंटियर ने राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली, राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दी।

समाजसेवी रामबहोरी गुप्ता का निधन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिला अंतर्गत जवा के प्रतिष्ठित व्यवसाई एवं वरिष्ठ समाजसेवी रहे रामबहोरी गुप्ता का 90 बर्ष की आयु में निधन हो गया। जिनके निधन का समाचार मिलते ही पूरे क्षेत्र में शोक की लहर छा गई। लोगों ने अपने प्रतिष्ठान बंदकर अंतिम यात्रा में शामिल होकर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित किया और गहरा शोक व्यक्त किया।स्वर्गीय गुप्ता ने अपने पीछे सात भाईयो और पांच पुत्रों का पूरा भरा परिवार छोड़ दिवंगत हुए हैं। जिनका मुख्यानि जेष्ठ पुत्र प्रभात गुप्ता (नत्थू) ने दिया।

भाई बहन की जोड़ी ने जीता विजेता का खिताब

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विगत दिवस राज कपूर ऑडिटोरियम में संपन्न हुए सुर ताल महोत्सव में रिदम म्यूजिकल ग्रुप का धमाकेदार प्रदर्शन रहा जहां डुएट सॉन्ग में रिदम म्यूजिकल ग्रुप ने विजेता और उपविजेता का खिताब जीता डॉ विनोद तिवारी एवं अर्चना शुक्ला विजेता रहे वही उपविजेता धर्मेंद्र सत्यार्थी और नीलम गुप्ता रहे जूनियर वर्ग में लक्ष्य मिश्रा विजेता रहे बघेली में ललिता पांडे अमित द्विवेदी की टीम उपविजेता रही, वहीं विंध्य बघेली का सम्मान मनोभावना सिंह जी को प्रदान किया गया आपने बिना प्रतिस्पर्धा में रहते हुए बहुत ही शानदार बघेली गीत गया रिदम म्यूजिकल की ओर से अवनीश शर्मा के द्वारा शानदार एंकरिंग की गई साथ ही रश्मि द्विवेदी ने भी खिताब जीता रिदम म्यूजिकल की ओर से किरण सिंह ने जज की भूमिका निभाई वहीं पीयूष मिश्रा, अनिल शुक्ला, राजेश श्रीवास्तव, नाजिया खान, ओम प्रकाश मिश्रा, सतीश मिश्रा, दीपिका शुक्ला, सुलेखा पटेल, नीलम तिवारी, रोशन सोनी, अंश मिश्रा, सत्येंद्र सिंह, सिंगर प्रिया मिश्रा ने प्रतियोगिता में अपनी अहम भूमिका निभाई एवं प्रतियोगिता को सफल और संपन्न होने में अपनी सहभागिता निभाई डॉ आरती तिवारी ने ग्रुप के सभी सदस्यों को बधाई दी है।

विश्व योग दिवस पर जिला, विकासखण्ड तथा ग्राम पंचायत में होंगे योगाभ्यास

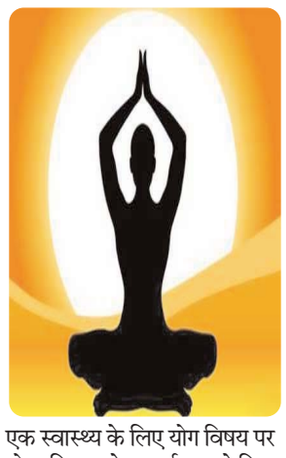

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। योग विद्या देश विशिष्ट पहचान है। हर वर्ष 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाता है। शासन द्वारा योग दिवस के संबंध में जारी निर्देशों के अनुसार इस वर्ष 21 जून को जिला, विकासखण्ड और ग्राम पंचायत स्तर तक योग दिवस मनाया जाएगा। योग दिवस पर सभी शिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों में सामूहिक योगाभ्यास के कार्यक्रम आयोजित होंगे। योग दिवस के कार्यक्रम में विद्यार्थियों, शासकीय कर्मचारियों, एनसीसी, एनएसएस, पुलिसकर्मियों, स्वयंसेवी संगठनों, आद्योगिक संगठनों और आम नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। योग दिवस में शामिल होने वाले सभी व्यक्तियों का पंजीयन भारत सरकार की वेबसाइट योगा डॉट आयुष डॉट जीओभी डॉट/इन योगा-संगम में पंजीयन कराना होगा। इस वर्ष एक पृथ्वी-एक स्वास्थ्य के लिए योग विषय पर योग दिवस के कार्यक्रम केन्द्रित होंगे। इस वर्ष योग दिवस पर 21 जून को प्रदेश के 10 प्रमुख पर्यटन स्थलों में योगाभ्यास के विशेष सत्र आयोजित किए जा रहे हैं। अनूपपुर जिले में अमरकंटक, रायसेन जिले में भीमबैठका गुफा, भोपाल जिले में रानी कमलापति महल, उमरिया जिले में बांधवगढ़, ग्वालियर जिले में मान सिंह महल के पास, छतरपुर जिले में खजुराहो के मंदिर में योग दिवस के कार्यक्रम होंगे। इसी तरह निवाड़ी जिले के ओरछा में, रायसेन जिले के सांची स्तूप के पास, धार जिले में माण्डू में जहाज महल के सामने तथा खरगौन जिले के महेश्वर में योग के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

रीवा में जिला स्तरीय योग दिवस कार्यक्रम शासकीय उत्कृष्ट उमावि मार्तण्ड क्रमांक एक के परिसर में आयोजित किया जा रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल होंगे। योग दिवस के कार्यक्रम प्रातः 6 बजे शुरू होंगे। इसमें 6 बजे से 6.30 बजे तक स्थानीय जनप्रतिनिधियों का उद्बोधन होगा। इसके बाद भोपाल से मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के योग दिवस संदेश और उद्बोधन का सुबह 6.30 बजे से 6.40 बजे तक सजीव प्रसारण सभी स्थलों में दिखाया जाएगा। इसके बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विशाखापट्नम से योग दिवस के उद्बोधन का सुबह 6.40 बजे से सजीव प्रसारण दिखाया जाएगा। कार्यक्रम में सुबह 7 बजे से 7.45 बजे तक निर्धारित योग प्रोटोकाल के अनुसार सामूहिक योगाभ्यास होगा। प्रत्येक आयोजन स्थल पर प्रशिक्षित योग शिक्षक की निगरानी में योगाभ्यास कराया जाएगा। सभी जिला मुख्यालय, विकासखण्ड मुख्यालय और ग्राम पंचायतों में प्रमुख सार्वजनिक स्थल पर योग दिवस में योगाभ्यास के कार्यक्रम होंगे। इनमें अधिक से अधिक व्यक्तियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। इन कार्यक्रमों में महिलाओं की भी अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। महिला स्वसहायता समूहों के लिए पृथक से योग के कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

डाक विभाग एजेंट चयन के लिए साक्षात्कार 7 जुलाई तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारतीय डाक विभाग में डाक जीवन बीमा एवं ग्रामीण डाक जीवन बीमा के व्यवसाय अर्जन के लिए डायरेक्ट सेल्स एजेन्ट के लिए साक्षात्कार आयोजित किये जा रहे हैं। अधीक्षक डाक संभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार साक्षात्कार 7 जुलाई तक लिए जाएंगे। आवेदक सुबह 11.30 बजे अपने समस्त दस्तावेज के साथ कार्यालय अधीक्षक डाकघर सिरमौर चौक रीवा में उपस्थित हो सकते हैं। कक्षा 10वीं पास तथा कम्प्यूटर का ज्ञान रखने वाले आवेदक हो साक्षात्कार में भाग ले सकते है।

खाद्य सुरक्षा योजना से अपात्र हितग्राहियों के नाम दो दिन में अलग करें - कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। खाद्य सुरक्षा योजना के सभी हितग्राहियों का ई केवाईसी अपडेशन किया जा चुका है। एम राशन मित्र पोर्टल में दर्ज मृत, विषमतामूलक परिवार, डुप्लीकेट तथा स्थाई रूप से पलायन कर गए हितग्राहियों के नाम स्थानीय निकायों की लॉगिन आईडी से पृथक किए जा रहे हैं। इसके लिए नगरीय निकाय के सभी वार्डों और सभी ग्राम पंचायतों में 20 और 21 जून को शिविर लगाए जाएंगे। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा है कि 20 और 21 जून को लगाए जा रहे शिविरों में सभी अपात्र हितग्राहियों के नाम पोर्टल से पृथक कराएं। प्रत्येक सेल्समैन को तथा ग्राम पंचायतों को इसकी सूची दी जा चुकी है। जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, आयुक्त नगर निगम तथा मुख्य नगर पालिका अधिकारी इसके लिए कर्मचारियों की ड्यूटी लगाएं। दी गई सूची के अनुसार अपात्र व्यक्तियों के नाम 21 जून तक अनिवार्य रूप से पोर्टल से पृथक करा दें। जिले से कुल 31583 अपात्र व्यक्तियों के नाम पोर्टल से पृथक करने का लक्ष्य है। सभी एसडीएम शिविरों का अनिवार्य रूप से आयोजन कराकर अपात्र व्यक्तियों के नाम पृथक कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

जिला स्तरीय बैंकर्स सलाहकार समिति की बैठक आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभागार में 20 जून को शाम 4 बजे से जिला स्तरीय बैंकर्स सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की जा रही है। बैठक में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल मार्च तिमाही की उपलब्धियों, बैंकों के ऋण-जमा अनुपात, किसान क्रेडिट कार्ड बनाने तथा प्राथमिक क्षेत्र में निवेश की बैंकवार समीक्षा करेंगी। बैठक में विभिन्न विभागों की बैंकों के सहयोग से लागू स्वरोजगार योजनाओं के क्रियान्वयन की भी समीक्षा की जाएगी। अग्रणी बैंक प्रबंधक जगमोहन ने सभी बैंकर्स तथा संबंधित अधिकारियों से बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया है।

रीवा में 22 जून को होगी भूतपूर्व सैनिकों की रैली

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भूतपूर्व सैनिकों की रैली 22 जून को कृष्णा राजकपूर आडिटोरियम में आयोजित की जायेगी। रैली के मुख्य अतिथि जनरल आफीसर कमांडिंग मध्य भारत एरिया लेफ्टिनेंट जनरल पीएस शेखावत होंगे। श्री शेखावत परमविशिष्ट सेवा मेडल तथा अति विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित अधिकारी हैं। रैली का उद्देश्य सैनिकों के योगदान का सम्मान करना और उनकी कल्याण संबंधी आवश्यकताओं को बताना है। इस संबंध में अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी ने बताया कि रैली में रीवा सहित आसपास के सभी जिलों के पूर्व सैनिक तथा सैन्य विधवाएं शामिल होंगी। रैली में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी तथा सैनिक कल्याण के डॉक्टरों के दल द्वारा सेवानिवृत्त सैनिकों के निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच की व्यवस्था की गई है। इसमें सभी तरह के टेस्ट निःशुल्क किए जाएंगे। अन्य जिलों से आने वाले पूर्व सैनिकों की सुविधा के लिए बस स्टैण्ड तथा रेलवे स्टेशन में निःशुल्क वाहन भी उपलब्ध कराया जा रहा है। कार्यक्रम स्थल कृष्णा राज कपूर आडिटोरियम में साफ-सफाई तथा पेयजल की व्यवस्था के लिए नगर निगम की टीम तैनात रहेगी। पूर्व सैनिक अपने पहचान पत्र के साथ रैली में शामिल होकर विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ ले सकते हैं। रैली में कल्याण सहायता पंजीकरण, सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता, पेंशन संबंधी सहायता और विशिष्ट सेवा को मान्यता देने के लिए औपचारिक कार्यक्रम जैसी गतिविधियाँ शामिल की जायेगीं।

शूटिंग प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ियों का चयन आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन के खेल और युवा कल्याण विभाग द्वारा मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय शूटिंग अकादमी भोपाल में प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण में चयन के लिए रीवा तथा मऊगंज जिले के सभी विकासखण्डों के राइफल पिस्टल एवं शॉटगन में 9 से 18 वर्ष आयु के शूटिंग के खिलाड़ियों का चयन 20 जून को स्पोर्ट्स काम्पलेक्स रीवा में किया जाएगा। इस संबंध में संभागीय खेल अधिकारी एमके धौलपुरी ने बताया कि इच्छुक शूटर सुबह 9 बजे स्पोर्ट्स काम्पलेक्स पहुंचकर प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए अपना पंजीयन करा सकते हैं। पंजीयन कराने के लिए जन्म प्रमाण प्त्र, अंकसूची, आधार कार्ड दो पासपोर्ट आकार के फोटो तथा निवास प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना आवश्यक होगा। पंजीयन पूरी तरह से निःशुल्क है। राज्य स्तरीय अकादमी में चयनित होने पर प्रतिभाशाली शूटर को कुशल प्रशिक्षकों द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा। खिलाड़ियों के आवास और भोजन की भी निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। स्पोर्ट्स काम्पलेक्स में आयोजित खिलाड़ियों के चयन प्रतियोगिता में राज्य अकादमी के प्रशिक्षक श्री जयवर्द्धन सिंह, तकनीकी प्रशिक्षक श्री वैभव शर्मा तथा प्रशिक्षक इंद्रजीत सिगदर एवं सुश्री अपराजिता सिंह द्वारा खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा।

भूमि क्रय पर दावे और आपत्तियाँ 7 तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया है कि रीवा जिले में लक्ष्मणबाग संस्थान परिसर में महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय रीवा का कैम्पस संचालित है। इसके भवन निर्माण के लिए धारणाधिकार की भूमि की आवश्यकता है। प्रबंधक लक्ष्मणबाग संस्थान की खसरा क्रमांक 211, खसरा क्रमांक 212 तथा खसरा क्रमांक 213 की कुल 8.10 हेक्टेयर भूमि क्रय के लिए विचारार्थ है।

कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा, जिला-रीवा (म.प्र.)

// निविदा सूचना //

क्रमांक-715/ई-टेण्डर/जोन-02,04/न.पा.नि./2025 रीवा, दिनांक: 18/06/2025

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीयकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट https://mptenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

क.	टेण्डर क्रमांक एवं जारी दिनांक तथा NIT क्रमांक / दिनांक	कार्य का नाम	कार्य की समयावधि एवं लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविदा की अंतिम तिथि
1	2	3	4	5	6
1.	2025_UAD_431661_1 18.06.2025 [FIRST CALL] 713/18.06.2025	जोन क्रमांक-02 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-09 में कुबेर तालाब मेन रोड से लालमणि तिवारी जी के घर तक निराला नगर में RCC सड़क एवं पुरानी नाली में कवर निर्माण का कार्य।	03 माह रु. 16.74 लाख	रु.2000.00 रु.12555.00	18.07.2025 18:00 बजे तक।
2.	2025_UAD_431662_1 18.06.2025 [FIRST CALL] 714/18.06.2025	जोन क्रमांक-04 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-44 में चिरहुला कॉलोनी में स्थित जोन कार्यालय के राजस्व शाखा में फात सीलिंग, शौचालय निर्माण एवं पेवर ब्लाक लगाने का कार्य।	03 माह रु. 10.96 लाख	रु.2000.00 रु.8220.00	18.07.2025 18:00 बजे तक।

नोट: निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन https://mptenders.gov.in की वेबसाइट पर ही किया जायेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

कार्यपालन यंत्री,
जोन क्र. 02,04
नगर पालिक निगम, रीवा (म.प्र.)

विचार

सुप्रीम कोर्ट को स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी करने चाहिए

सर्वोच्च न्यायालय ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जुड़े एक मामले में कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा दिए गए निर्देशों पर सवाल उठाकर अच्छा काम किया है। यह मामला अभिनेता कमल हासन के उस बयान से संबंधित है, जिसमें उन्होंने कहा था कि कन्नड़ भाषा तमिल से उत्पन्न हुई है। इस बयान के कारण कर्नाटक में व्यापक विरोध प्रदर्शन हुआ और कुछ नेताओं ने कमल हासन की नवीनतम फिल्म 'ठग लाइफ' दिखाने वाले सिनेमाघरों को जलाने की धमकी दी।

उच्च न्यायालय में हासन की याचिका को न्यायाधीश न्यायमूर्ति एम. नागप्रसन्ना ने खारिज कर दिया और अभिनेता से उनकी टिप्पणी के लिए माफी मांगने को कहा तथा कहा कि 'किसी भी नागरिक को भावनाओं को ठेस पहुंचाने का अधिकार नहीं है।' अदालत ने कहा कि हासन स्पष्टीकरण जारी कर सकते थे, कह सकते थे कि 'मैंने इतिहास को देखे बिना बयान दिया है' और कहा कि 'एक माफी से सब कुछ हल हो जाता... लेकिन रवैया तो देखिए!'

जस्टिस नागप्रसन्ना ने भी हासन के दावे पर सवाल उठाया, 'ये परिस्थितियां कमल हासन द्वारा पैदा की गई थीं, और उन्होंने कहा है कि वे माफी नहीं मांगेंगे। आपने कर्नाटक के लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाई है... किस आधार पर? क्या आप इतिहासकार हैं? या भाषाविद् हैं?' अदालत ने अभिनेता द्वारा अशांति पैदा करने के बावजूद पुलिस से सुरक्षा मांगने के निर्णय पर भी सवाल उठाया। 'अब आप यहां व्यावसायिक हित के लिए आए हैं, कि पुलिस को आपके द्वारा पैदा की गई स्थिति से सुरक्षा करनी चाहिए।' कमल हासन द्वारा माफी मांगने से इंकार करने के बाद, फिल्म कर्नाटक में रिलीज नहीं की गई, जिसके बाद देश की सर्वोच्च अदालत में एक जनहित याचिका (पी.आई.एल.) दायर की गई।

न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां और न्यायमूर्ति मनमोहन की सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने कहा कि कानून के शासन को भीड़ की धमकियों का बंधक नहीं बनाया जा सकता। उन्होंने चेतावनी दी कि 'गुंडों के समूहों' को यह तय करने की अनुमति नहीं दी जा सकती कि सिनेमाघरों में क्या दिखाया जाएगा। पीठ ने टिप्पणी की, 'यदि किसी ने कोई बयान दिया है, तो आप उसका जवाब दूसरे बयान से दे सकते हैं। आप थिएटरों को जलाने की धमकी नहीं दे सकते।' सर्वोच्च न्यायालय ने फिल्म के निर्माता द्वारा दायर याचिका को कर्नाटक उच्च न्यायालय से अपने पास स्थानांतरित कर लिया और राज्य सरकार से जवाब दाखिल करने को कहा। इसने उच्च न्यायालय की भूमिका पर सवाल उठाया, विशेषकर इस सुझाव पर, कि मुद्दे को सुलझाने के लिए अभिनेता को अपनी टिप्पणी के लिए माफी मांगनी चाहिए। न्यायालय ने कहा कि किसी से उसकी टिप्पणी के लिए माफी मांगने को कहना न्यायालय का काम नहीं है। इसने इस बात पर जोर दिया कि एक बार जब किसी फिल्म को केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सी.बी.एफ.सी.) से मंजूरी मिल जाती है, तो उसे रिलीज होने की अनुमति दी जानी चाहिए। अदालत ने कहा, 'लोग इसे न देखने का विकल्प चुन सकते हैं। लेकिन हम धमकी और भय के आधार पर यह तय नहीं कर सकते कि फिल्म रिलीज होगी या नहीं।' अदालत ने इस तर्क के समर्थन में, कि लोकतंत्र में भिन्न विचारों की अनुमति होनी चाहिए, 'मि. नाथूराम बोलतोय' नाटक मामले में बॉम्बे उच्च न्यायालय के फैसले और इमरान प्रतापगढ़ी फैसले सहित पिछले निर्णयों का हवाला दिया।

दुनिया में कोई फ्री में नहीं खिलाता, व्हाइट हाउस में ट्रंप की रोटी खाते ही मुनीर को यह बात समझ आ गयी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल असीम मुनीर के साथ दोपहर का भोज करके पूरी दुनिया को यह स्पष्ट संदेश दे दिया है कि पाकिस्तान में सरकार नहीं बल्कि सेना ही असली ताकत रखती है। ट्रंप ने जिस तरह से असीम मुनीर को खाना खिलाते समय कहा कि मुझे पाकिस्तान से प्यार है उससे यह भी संकेत मिले कि अमेरिकी राष्ट्रपति के मन में कुछ बड़ा चल रहा है। हम आपको बता दें कि ईरान पर हमला करने की तैयारी कर चुका अमेरिका चाहता है कि पाकिस्तान उसकी मदद करे। हम आपको याद दिला दें कि अफगानिस्तान में तालिबान शासन को उखाड़ने के लिए भी अमेरिका ने पाकिस्तान को अपना बेस बनाया था।

चूंकि ईरान की सीमाएं भी पाकिस्तान के साथ लगती हैं इसलिए अमेरिका चाहता है कि पाकिस्तान एक बार फिर उसे अपना बेस वहां बनाने दे ताकि उसके लड़ाकू विमान वहीं से उड़ान भर सकें। अमेरिका जानता है कि पाकिस्तान में इस बात की इजाजत वहां की सरकार नहीं बल्कि सेना ही दे सकती है इसलिए मुनीर को लंच पर बुलाया गया।

इसके अलावा इजराइल भी चाहता है कि ईरान को किसी भी मुस्लिम देश की मदद नहीं मिले, इसके लिए उसने अमेरिका से पाकिस्तान को समझाने के लिए कहा था। हम आपको बता दें कि पाकिस्तान और इजराइल के बीच राजनयिक संबंध नहीं हैं और हाल ही में पाकिस्तान ने ईरान पर हुए इजराइली हमलों की निंदा की है इसलिए ट्रंप यह सुनिश्चित कर रहे थे कि पाकिस्तान ईरान की मदद के लिए आगे नहीं आये। इसके अलावा ट्रंप का एक और गेम प्लान यह था कि वह मुनीर को लंच कराने के दौरान उनकी भेंट भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से करवा दी जाये लेकिन मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति की यह चाल समझ गये थे इसलिए उन्होंने कनाडा से लौटते वक्त अमेरिका में कुछ समय रुकने का उनका आग्रह ठुकरा दिया था। मोदी समझ गये थे कि यदि ट्रंप ने अचानक उनकी और मुनीर की भेंट करवा कर दुनिया के सामने फिर से यह दावा कर दिया कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच सुलह करवा दी है तो उनके लिए घरेलू राजनीतिक मोर्चे पर नई मुश्किल खड़ी हो जायेगी।

जहां तक ट्रंप और मुनीर के लंच की बात है तो बताया जा रहा है कि पहला निवाला मुंह में डालते ही मुनीर के होश उड़ गये क्योंकि वह कट्टरपंथी स्वभाव के हैं इसलिए उन्हें यह बात रास नहीं आई कि वह ईरान का साथ देने की बजाय इजराइल को अपना मिशन पूरा करते हुए देखें। मुनीर को ट्रंप की रोटी खाते ही यह बात समझ आ गयी कि दुनिया में कोई भी फ्री में कुछ नहीं खिलाता। वैसे भी ट्रंप राजनीतिज्ञ कम, व्यापारी ज्यादा हैं और उन्हें पता है कि पाकिस्तान के किसी भी सेनाध्यक्ष को मुंहमांगी कीमत देकर आसानी से खरीदा जा सकता है। यही काम ट्रंप ने किया और मुनीर को अपने पाले में कर लिया। वैसे, अमेरिकी राजनीति के इतिहास में यह दुर्लभ ही नहीं बल्कि अभूतपूर्व घटना है कि कोई अमेरिकी राष्ट्रपति किसी विदेशी सैन्य प्रमुख को लंच पर बुलाए। हालांकि अयूब खान, जिया-उल-हक और परवेज़ मुशर्रफ जैसे पाकिस्तानी सैन्य नेताओं ने अतीत में अमेरिकी राष्ट्रपतियों से मुलाकात की थी, लेकिन उन्होंने यह मुलाकात तब की थी जब वे सैन्य तख्तापलट के बाद पाकिस्तान के नेता बन गए थे। हम आपको यह भी बता दें कि ज़िया-उल-हक और मुशर्रफ ने भी अमेरिका से अरबों डॉलर की सैन्य सहायता और अनुदान प्राप्त करने के लिए पाकिस्तान को एक किराए की सेना में बदल दिया था।

अमेरिकी मीडिया रिपोर्टों में भी कहा गया है कि ट्रंप की इस पहल को मुनीर को पाकिस्तान का वास्तविक नेता मानने के तौर पर देखा जा रहा है। साथ ही ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिका ईरान में अपने संभावित हमलों के लिए मुनीर का समर्थन प्राप्त करना चाहता है। इसके साथ ही अमेरिका और इज़राइल यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि ईरान इस्लामी दुनिया में अलग-थलग रहे और उसे पाकिस्तान का समर्थन नहीं मिले। अमेरिकी मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक ट्रंप की अजीबो-गरीब नीतियों को देखते हुए, यह भी संभव है कि मुनीर को चेतावनी दी गई हो कि अगर इस्लामाबाद ने ईरान का समर्थन किया तो परिणाम भुगतने होंगे। हम आपको बता दें कि पाकिस्तान की सरकार ने इज़राइल द्वारा ईरान पर किए गए हमलों की निंदा की है और उन्हें ईरान की संप्रभुता का खुला उल्लंघन और अनुचित तथा अवैध आक्रामकता बताया है।

एक रोचक तथ्य यह भी है कि वैसे तो मुनीर कट्टर इस्लामवादी माने जाते हैं, मगर उनके बारे में अमेरिका में रहने वाले इमरान खान की पीटीआई पार्टी के समर्थकों का आरोप है कि वह इज़राइल समर्थक हैं और अमेरिका-इज़राइल की ईरान के खिलाफ कार्रवाई का समर्थन कर रहे हैं ताकि पाकिस्तान एकमात्र इस्लामी परमाणु शक्ति बना रहे। हम आपको बता दें कि पीटीआई कार्यकर्ताओं ने ही सबसे पहले मुनीर की अमेरिका में गुप्त यात्रा का खुलासा किया था और आरोप लगाया था कि उन्होंने वॉशिंगटन डीसी में एक इज़राइल समर्थक लॉबी समूह की बैठक में भाग लिया। उन्होंने उनके अमेरिकी सहयोगी साजिद तारार को इज़राइल का कट्टर समर्थक और फिलिस्तीनी व ईरानी मुसलमानों का दुश्मन बताया था।

जहां तक ट्रंप और मुनीर के लंच के बाद आये अमेरिकी राष्ट्रपति के बयान की बात है तो आपको बता दें कि उन्होंने कहा है कि मुझे पाकिस्तान से प्यार है। साथ ही उन्होंने यह दावा किया है कि मुनीर ने भारत के साथ एक विनाशकारी युद्ध को टाल दिया। ट्रंप ने कहा, मुनीर इस युद्ध को पाकिस्तान की ओर से रोकने में बेहद प्रभावशाली था। यह भी कहा जा रहा है कि मुनीर को अमेरिकी राष्ट्रपति की ओर से लंच का निमंत्रण उस समय आया जब उन्होंने ट्रंप को भारत-पाक परमाणु युद्ध को रोकने के लिए नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किए जाने की सिफारिश की। यह भी बताया जा रहा है कि यह लंच मीटिंग पाकिस्तानी-अमेरिकी व्यवसायी साजिद तारार के प्रयासों से आयोजित हुई, जो ट्रंप के लंबे समय से समर्थक और अमेरिकन मुस्लिम्स फॉर ट्रंप समूह के संस्थापक हैं। तारार पिछले तीन रिपब्लिकन राष्ट्रीय सम्मेलन में वक्ता रहे हैं और उनकी विचारधारा से करीबी के कारण उनके बेटे को ट्रंप के पहले कार्यकाल में स्टेट डिपार्टमेंट में नियुक्ति मिली थी। रिपोर्टों के मुताबिक तारार ने फोर सीज़न्स होटल में मुनीर के लिए एक सामुदायिक स्वागत समारोह भी आयोजित किया, जिसमें सेना प्रमुख ने प्रवासी पाकिस्तानियों को पाकिस्तान के सच्चे राजदूत बताया और उनके रेमिटेंस, निवेश और उपलब्धियों के माध्यम से अर्थव्यवस्था और वैश्विक छवि में योगदान की सराहना की। बहरहाल, पाकिस्तान को अपने पहले कार्यकाल में धोखेबाज़ और आतंकवादियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह कहने वाले ट्रंप का आतंकी देश के प्रति अचानक यू-टर्न पूरी दुनिया को चौंका रहा है। लेकिन सब यह भी समझ रहे हैं कि अमेरिका इस समय पाकिस्तान का उपयोग करना चाह रहा है। अमेरिका में तो ट्रंप के इन पैतरों का विश्लेषण भी शुरू हो गया है। राष्ट्रीय सुरक्षा विश्लेषक डेरेक ग्रॉसमैन ने कहा, यह काफी हैरानी वाली बात है कि ट्रंप ने मोदी को चुपचाप व्हाइट हाउस आमंत्रित करने की कोशिश की जब असीम मुनीर भी वहां लंच के लिए मौजूद थे। उन्होंने कहा कि ट्रंप को भारत-पाकिस्तान तनावों की पृष्ठभूमि और इतिहास की कोई समझ नहीं है, वह बस एक फोटो खिंचवाना चाहते हैं ताकि बाद में नोबेल पुरस्कार मिल सके।

एफएटीएफ के निशाने पर है पाक का आतंकवाद

विश्व में मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवाद के वित्तपोषण पर नजर रखने वाली संस्था वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (एफएटीएफ) ने भले ही अभी पाकिस्तान को ग्रे लिस्ट में नहीं डाला है, लेकिन उसने अंततः 22 अप्रैल को पहलगाम की क्रूर आतंकवादी हमले की निंदा की है। ऐसा करते हुए एफएटीएफ ने भारत की तार्किक दलील पर ही मोहर लगायी है जो भारत की इस विषयक सफलता को द्योतक हैं। एफएटीएफ ने दो टूक शब्दों में कह दिया है कि 'ऐसे घटनाक्रम बिना पैसे और आतंकवादियों के समर्थकों के बीच फंडों के स्थानांतरित करने के बगैर नहीं हो सकते।' आखिरकार भारत की यह चिर-प्रतीक्षित मांग कि पाक को आतंकवाद के पोषण के लिये कटघरे में खड़ा किया जाए, इस मांग के सफलता की सीढ़ियां चढ़ने का ही संकेत हैं। भारत ने पहलगाम आतंकी हमले के बाद विश्व जनमत को पाकिस्तान की हकीकत बताने के जो सार्थक प्रयास किए थे, भारत के सांसदों एवं अफसरों के प्रतिनिधिमण्डल को पाक को बेनकाब करने के लिये विश्व के प्रमुख देशों में भेजा, वे फलीभूत होते नजर आ रहे हैं।

एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में किसी देश को तब तक निगरानी में रखा जाता है, जब तक कि वह अपनी वित्तीय प्रणाली में पहचानी गई खामियों, त्रुटियों, विसंगतियों को ठीक नहीं कर लेता। पाकिस्तान निरंतर आतंकवाद को पोषण एवं प्रोत्साहन देने के लिये 2022 तक ग्रे लिस्ट में था, उसी वर्ष उसे ग्रे लिस्ट से हटाया गया, बावजूद पाकिस्तान ने कोई सुधार नहीं किया है और आतंकवादियों को न सिर्फ सुरक्षित पनाहगाह उपलब्ध करा रहा है, बल्कि आतंकवाद के वित्तपोषण जैसे आपराधिक कामों में भी खुद को शामिल करते हुए आतंकवाद की प्रयोगशाला बना हुआ है। एफएटीएफ ने फरवरी 2019 में पुलवामा आत्मघाती हमले की भी निंदा करते हुए ऐसे ही कठोर शब्दों का उपयोग किया था। लेकिन इस बार का अंतर यह है कि एफएटीएफ ने घोषणा की है कि 'राज्य प्रायोजित आतंकवाद' इसकी आगामी रिपोर्ट में आतंकवाद के वित्तपोषण मामलों की जांच का हिस्सा होगा। दरअसल, पहलगाम नरसंहार के बाद भारत लगातार पाक को फिर से एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में डालने की मांग करता रहा है। जो पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय ऋणों तक पहुंच को गंभीर रूप से सीमित कर देगा।दरअसल, पाकिस्तान गढ़े हुए तर्कों के आधार पर इस निगरानी संगठन एफएटीएफ को मनाने में आंशिक रूप से सफल रहा था कि वह धन शोधन और आतंकवाद वित्तपोषण से निपटने के लिये अपने सिस्टम में सुधार कर रहा है। उल्लेखनीय है कि भारत के प्रबल विरोध के बावजूद इस्लामाबाद ने अंतर्राष्ट्रीय मद्रा कोष यानी आईएमएफ से एक अरब डॉलर का बेलआउट पैकेज हासिल करने में कामयाबी हासिल कर ली थी। हालांकि, इस बेलआउट पैकेज के साथ कई कड़ी शर्तों का सामना भी पाक को करना पड़ेगा। यूं भी यह अन्तर्राष्ट्रीय धन का गलत एवं अतिश्योक्तिपूर्ण इस्तेमाल देरसबेर विश्व के सामने आयेगा। भारत दुनिया के देशों को यह बताने और समझाने में कामयाब रहा है कि पाक न केवल आतंकवाद का समर्थन करता है, बल्कि वह आतंकवाद का पोषक भी है और वह आतंकवाद के लिए फंडिंग भी करता है। इस तरह इसे भारत की कूटनीतिक विजय कहा जा सकता है। क्योंकि एफएटीएफ का इतना बोल्ड बयान पाकिस्तान के मुंह पर तमाचा है। एफएटीएफ की ओर से जारी आधिकारिक बयान की गहराई को समझने की जरूरत है, कि आतंकवादी हमले दुनिया भर में लोगों की जान लेते हैं, उन्हें अपंग बनाते हैं और भय पैदा करते हैं। यानि एफएटीएफ ने यह मान लिया है कि पहलगाम हमला आतंकवादी वित्त पोषण के कारण ही अमल में आया। एफएटीएफ का यह बयान भारत के लिए बहुत अहम है। ध्यान रहे कि एफएटीएफ, जी-7 देशों की ओर से स्थापित एक स्वतंत्र संस्था है, जो देशों की वित्तीय नीतियों का मूल्यांकन करती है। गौरतलब है कि वर्तमान में एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में 24 देशों का नाम है, जो धन शोधन, आतंकवादी वित्तपोषण और प्रसार वित्त पोषण के लिए निगरानी में हैं।

यहां यह उल्लेखनीय एवं ध्यान देने वाली बात है कि पाक को कई बार एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में डाला जा चुका है। इसे पहली बार 2008 में ग्रे लिस्ट में डाला गया था, लेकिन बाद में 2010 में इसे हटा लिया गया। इसके बाद, 2012 में पाक को फिर से इस लिस्ट में डाला गया और 2015 में इसे दुबारा हटा दिया गया। इसके बाद, पाक को जून 2018 में फिर से ग्रे लिस्ट में डाला गया था और अक्टूबर 2022 में इसे हटा लिया गया। लेकिन यह कुत्ते की ऐसी दूम है जिसे कितने की कड़े प्रावधानों में रखा जाये, यह टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है। उल्लेखनीय है कि एफएटीएफ ने वैश्विक नेटवर्क में 200 से अधिक क्षेत्रों के मूल्यांकन में योगदान देने वाले विशेषज्ञों का समर्थन करने के लिए आतंकवादी वित्तपोषण जोखिम पर मार्गदर्शन विकसित किया है। अहम बात यह है कि एफएटीएफ के सख्त एवं कठोर व्यवहार के बाद अंतरराष्ट्रीय निवेशकों के यह समझ में आने लगा है कि पाकिस्तान एक असुरक्षित एवं आतंकवादी पोषक गंतव्य बनता जा रहा है। ऐसे में एफएटीएफ के दबाव और आर्थिक प्रतिबंधों की संभावना के कारण पाक की पहले से ही डांवाडोल अर्थव्यवस्था को और झटका लग सकता है।

जी-7 शिखर बैठक 15 से 17 जून 2025 तक कनाडा के अल्बर्टा प्रांत के कनानास्किस में कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी की मेज़बानी में हो रही है। इसमें जी-7 देशों के प्रमुखों के अलावा, भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमीर ज़ेलेंस्की, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा और ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज़ जैसे नेताओं को भी आमंत्रित किया गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बैठक के दौरान जी-7 के सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों को पाक का सच और ऑपरेशन सिंधूर की सफलता के बारे में बताते हुए आतंकवाद के विरोध में संगठित होने के लिये वातावरण बना रहे हैं। भारत ने एफएटीएफ के बयान का स्वागत करते हुए कहा भी है कि यह वैश्विक स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ एकजुट रुख की पुष्टि करता है। सुरक्षा विशेषज्ञों ने भी एफएटीएफ की चेतावनी को गंभीर बताते हुए कहा कि यह पाक के लिए एक और बड़ा झटका है, जिससे उसकी वैश्विक छवि और कमजोर हो सकती है। गौरतलब है कि भारतीय अधिकारियों ने पिछले महीने पेरिस और वॉशिंगटन में एफएटीएफ प्रतिनिधियों से बैठक कर पाक के खिलाफ नई कार्रवाई की मांग की थी।

ग्राम भूमका में जल संरक्षण को लेकर चलाया गया जागरूकता अभियान, ग्रामीणों ने जल बचाने का लिया दृढ़ संकल्प

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जल जीवन मिशन के अंतर्गत विगत 17 जून 2025 को ग्राम पंचायत मन्नौड के ग्राम भूमका विकासखंड भरतपुर में एक प्रेरक जल जागरूकता ग्राम सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल की आवश्यकता, जल स्रोतों के संरक्षण और जल की बर्बादी रोकने के प्रति जागरूक करना था। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारी कार्यपालन अभियंता ओंकार सिंह, सहायक अभियंता जयंत कुमार चंदेल और उप अभियंता मनमोहन सिंह के मार्गदर्शन में यह सभा आयोजित की गई। इस दौरान जिला परियोजना समन्वयक अनिमेष कुमार तिवारी, तकनीकी विशेषज्ञ ज्ञानेंद्र कुमार साहू, सीडीएटी प्रतिनिधि रितेश डिक्सेना और आईईसी प्रतिनिधि नवीन कुमार ने ग्रामीणों को जल संरक्षण से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान कीं। कार्यक्रम के दौरान गाँव में अब तक किए गए जल संरक्षण कार्यों की समीक्षा की गई, श्हर घर नल से जलश् योजना की प्रगति पर चर्चा हुई और ग्रामीणों को जल गुणवत्ता जांच प्रक्रिया तथा उसके महत्व से अवगत कराया गया। वर्षा जल संचयन, जल स्रोतों की सुरक्षा और जल बर्बादी रोकने के उपायों पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही ग्रामीणों को 'जल संवाद' तंत्र के माध्यम से जल समस्याओं के समाधान की प्रक्रिया भी समझाई गई। ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों, जल बहनियों और बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों ने जल के विवेकपूर्ण उपयोग का संकल्प लिया और इस अभियान को गाँव-गाँव तक पहुँचाने तथा जल संरक्षण को जन आंदोलन बनाने की प्रतिबद्धता जताई। यह जागरूकता सभा सहभागिता और उत्साह के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

ईंपिक कार्ड वितरण को तेज करने के लिए ईसीआई की नई पहल

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। भारत निर्वाचन आयोग ने मतदाताओं की सुविधा और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक अहम कदम उठाया है। अब निर्वाचक फोटो पहचान पत्र (ईपिक) का वितरण और अधिक तेज़, पारदर्शी और प्रभावी हो गया है। आयोग द्वारा लागू किए गए नए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर के अंतर्गत यह सुनिश्चित किया जाएगा कि मतदाता सूची में नाम जोड़ने या किसी प्रकार के संशोधन के बाद 15 दिनों के भीतर संबंधित व्यक्ति को उनका ईपिक कार्ड प्राप्त हो जाए। इस नवाचारपूर्ण प्रणाली के तहत प्रत्येक ईपिक कार्ड की प्रक्रिया को पूरी तरह से डिजिटल और ट्रैक करने योग्य बनाया गया है। मतदाता को कार्ड जारी होने से लेकर उसके वितरण तक हर चरण की जानकारी स्स्र के माध्यम से दी जाएगी। यह पहल मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार एवं निर्वाचन आयुक्तगण डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ. विवेक जोशी के नेतृत्व में की गई है, जो देशभर के मतदाताओं को त्वरित और कुशल सेवाएं देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस उद्देश्य को साकार करने के लिए निर्वाचन आयोग ने हाल ही में शुरू किए गए श्ष्टद्बह्न–ह्ल प्लेटफॉर्म पर एक समर्पित आईटी मॉड्यूल विकसित किया है जो ईपिक वितरण की पूरी प्रक्रिया को सरल, तेज और पारदर्शी बनाएगा। डाक विभाग का एप्लीकेशन प्रोग्राम इंटरफेस भी श्ष्टद्बह्न–ह्ल से जोड़ा जाएगा जिससे कार्ड का निर्बाध वितरण सुनिश्चित हो सके। इस पहल से न केवल सेवाओं की गुणवत्ता में वृद्धि होगी बल्कि डेटा सुरक्षा भी सुनिश्चित की जा सकेगी। निर्वाचन आयोग का यह प्रयास डिजिटल युग में सुशासन और नागरिक सुविधा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आयोग ने बीते चार महीनों में मतदाताओं और अन्य हितधारकों के हित में कई क्रांतिकारी कदम उठाए हैं और यह नई प्रणाली उसी श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

अमृत सरोवर स्थलों पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर होंगे विशेष आयोजन

जनपद पंचायत भरतपुर द्वारा समस्त ग्राम पंचायतों को जारी किया गया निर्देश

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जनपद पंचायत भरतपुर, जिला मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर ने आगामी 21 जून 2025 को आयोजित 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर अमृत सरोवर स्थलों पर विशेष योग कार्यक्रम आयोजित करने की तैयारी प्रारंभ कर दी है। इस संबंध में मुख्य कार्यपालन अधिकारी भरतपुर के द्वारा सभी ग्राम पंचायतों के सचिवों और ग्राम रोजगार सहायकों को निर्देश जारी करते हुए स्पष्ट किया गया है कि अमृत सरोवर स्थलों पर आयोजित होने वाले इन कार्यक्रमों में संबंधित ग्राम पंचायतों के सरपंचों की भागीदारी अनिवार्य रूप से सुनिश्चित की जाए। जनपद पंचायत द्वारा यह निर्देश आयुक्त, महात्मा गांधी नरेगा, नवा रायपुर अटल नगर तथा आयुष मंत्रालय द्वारा भेजे गए पत्र के संदर्भ में जारी किया गया है। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के 10 वर्षों की उपलब्धि के उपलक्ष्य में देश और विदेशों में 10 प्रमुख कार्यक्रमों की कार्ययोजना बनाई है, जिसमें विभिन्न विभागों और मंत्रालयों को सहभागिता हेतु दायित्व सौंपा गया है। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्रालय के निर्देशानुसार, छत्तीसगढ़ राज्य में प्रत्येक अमृत सरोवर स्थल पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया जाएगा और ग्राम सरपंचों की सक्रिय उपस्थिति के साथ यह आयोजन जनजागरूकता का माध्यम बनेगा। वहीं मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने समस्त संबंधित अधिकारियों को यह भी निर्देशित किया है कि 21 जून 2025 को आयोजित कार्यक्रम के फोटोग्राफ्स जनपद स्तर के आधिकारिक व्हाट्सएप ग्रुप में अनिवार्य रूप से साझा किए जाएं, ताकि राज्य स्तर पर आयोजन की निगरानी और प्रलेखन सुनिश्चित किया जा सके।

जनजातीय सशक्तिकरण की नई मिसाल बना पहाड़हसवाही का विशेष शिविर

"धरती आबा" अभियान के तहत योजनाओं का सीधा लाभ मिल रहा जनजातीय समुदाय को

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना "धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान" के अंतर्गत जिले में 17 जून से 30 जून 2025 तक चल रहे विशेष ग्राम स्तरीय विकास शिविरों की श्रृंखला के तहत आज जिले के विकासखंड मनेंद्रगढ़ के ग्राम पंचायत पहाड़हसवाही में एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में आसपास के ग्राम बड़काबहरा, रोकड़ा, घोड़बंधा, डिहुली, रोझी, बिरौरीडांड़ एव कछौड़ के सैकड़ों ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समुदायों को केंद्र व राज्य सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़कर समग्र, समावेशी और सतत विकास सुनिश्चित करना रहा। शिविर में 17 मंत्रालयों की 25 प्रमुख योजनाओं की जानकारी दी गई और कई योजनाओं का लाभ मौके पर ही पात्र हितग्राहियों को प्रदान किया गया। शिविर के दौरान आधार कार्ड, राशन कार्ड, जाति और निवास प्रमाण पत्र वितरण, आयुष्मान भारत योजना के तहत स्वास्थ्य बीमा कार्ड, पीएम किसान सम्मान निधि, किसान क्रेडिट कार्ड, जनधन योजना, वृद्धावस्था, विधवा एवं दिव्यांग पेंशन, नरेगा जॉब कार्ड, पीएम विश्वकर्मा योजना, मुद्रा लोन तथा मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ सीधे लोगों को दिया गया। शिविर में विभिन्न विभागों के अधिकारी, पंचायत प्रतिनिधि व फील्ड कर्मचारी पूरी तत्परता से मौजूद रहे।

जिला प्रशासन द्वारा इस अभियान की सतत निगरानी की जा रही है ताकि योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों तक पारदर्शिता और समयबद्धता के साथ पहुंचे। शिविर में ग्रामीणों की बड़ी भागीदारी यह दर्शाती है कि सरकार की योजनाओं में लोगों का भरोसा लगातार मजबूत हो रहा है। इस अभियान ने जनजातीय अंचलों में विकास के नए द्वार खोलने के साथ ही सामाजिक समरसता और "अंत्योदय" की भावना को मजबूती से आगे बढ़ाया है।

भूतपूर्व सैनिक की रैली रीवा में 22 को

सतना .भूतपूर्व सैनिक कल्याण समारोह रैली कृष्णा राजकपूर ऑडिटोरियम रीवा में 22 जून को प्रातः 8 बजे से सिंगनल रिकार्डस आफिस एमबी एरिया जबलपूर द्वारा आयाजित की जायेगी। जिसके मुख्य अतिथि जीओसी एमबी एरिया जबलपुर रहेंगे। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी सतना कर्नल मुनीन्द्र त्रिपाठी (से.नि.) ने रीवा एवं रीवा जिले से जुडे अन्य जिलों के सभी भूतपूर्व सैनिको, वीर नारियों, विधवाओं एवं वीर माता-पिता तथा अधिक से अधिक संख्या में रैली में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

मध्यप्रदेश राज्य शूटिंग एवं बैडमिंटन स्पोटर्स अकादमी में प्रवेष हेतु चयन 20 जून को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रभारी खेल एवं युवा कल्याण अधिकारी ने बताया कि वर्ष 2025-26 में मध्यप्रदेश राज्य शूटिंग एवं बैंडमिंटन अकादमी में प्रवेश के लिए बालक-बालिका खिलाडियों की चयनस्पर्धा का आयोजन किया जा रहा है। इनमें खेल शूटिंग पिस्टल, रायफल एवं बैडमिंटन का आयोजन 20 जून को प्रातः 9 बजे स्पोर्टस काम्पलेक्स नीम चौराहा आईटीआई के पास रीवा में कार्यर्₹ म आयोजित किया जायेगा। चयन ट्रायल में प्रतिभागिता करने वाले खिलाड़ियों को आवास, भोजन की व्यवस्था स्वयं वहन करना होगी। खिलाडियों को चयन स्थल पर आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र, मूल निवासी, स्थानीय निवासी प्रमाण पत्र की मूल कॉपी एवं उनकी 2 छायाप्रति सहित उपस्थित होना अनिवार्य है। चयन ट्रायल से संबंधित कोई भी जानकारी के लिए कुशल थापा मो. 8819022656 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर स्वामी आत्मानंद क्रीड़ा परिसर में होगा आयोजन

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल होंगे मुख्य अतिथि

एमसीबी/19 जून 2025/ 21 जून को 11वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जिले में "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य" की थीम पर उत्साहपूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर राज्य के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी आत्मानंद क्रीड़ा परिसर, मनेंद्रगढ़ में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में भाग लेंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 7.00 बजे योगाभ्यास सत्र से होगा, जिसमें स्वास्थ्य मंत्री स्वयं आम नागरिकों, युवाओं, बच्चों और अधिकारियों के साथ योगाभ्यास करेंगे। इस अवसर को विशेष बनाने हेतु जिले के राष्ट्रीय कैडेट कोर (ह्नष्टष्ट), राष्ट्रीय सेवा योजना (हस्स्), भारत स्काउट एंड गाइड, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, महिला स्व-सहायता समूह, स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के छात्र-छात्राएं एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों के प्रतिभागी भी भाग लेंगे। जिले में सभी विकासखंडों और ग्राम पंचायतों में भी योग दिवस पर सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिनमें स्थानीय जनप्रतिनिधि, अधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थी एवं ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। जिला प्रशासन द्वारा इस आयोजन को सफल बनाने हेतु सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। कार्यक्रम स्थल पर मेडिकल टीम, पेयजल व्यवस्था, योग प्रशिक्षकों की तैनाती और पार्किंग सुविधा सुनिश्चित की गई है।

रीवा/सतना की खबरें

वर्षा ऋतु में 15 अगस्त तक मत्स्याखेट पर प्रतिबंध

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। वर्षा ऋतु में मछलियों की वंश वृद्धि (प्रजनन) के दृष्टिकोण से संरक्षण देने हेतु राज्य के सभी प्रकार के निर्दिष्ट जल क्षेत्रों में म.प्र. नदीय मत्स्याखेट अधिनियम 1972 की धारा 3 (2) के अंतर्गत 16 जून से 15 अगस्त की अवधि को बंद ऋतु (क्लोज सीजन) घोषित किया गया है। कलेक्टर सतना डॉ. सतीश कुमार एस ने आदेश जारी कर जिले में इस अवधि में सभी प्रकार का मत्स्याखेट मत्स्य विनिमय अथवा परिवहन करना प्रतिबंधित किया है। कलेक्टर द्वारा जारी आदेशानुसार नियमों के उल्लंघन पर म.प्र. राज्य मत्स्यक्षेत्र (संशोधित) अधिनियम 1981 की धारा-5 के तहत उल्लंघनकर्ता को एक वर्ष का कारावास या पांच हजार रूपये जुर्माना या दोनों से दण्डित किये जाने का प्रावधान है। कलेक्टर ने अपील करते हुए कहा है कि जिले में 16 जून 2025 से 15 अगस्त 2025 तक की अवधि में किसी प्रकार का मत्स्याखेट न तो स्वयं करें और न ही इस कार्य में अन्य को सहयोग दें। छोटे तालाब तथा अन्य जल स्त्रोत जिनका कोई संबंध कोई नदी नाले से नहीं है, के लिए यह नियम लागू नहीं होगा।

विकासखण्ड स्तरीय रोजगार मेला आज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। शासकीय आईटीआई एवं रोजगार कार्यालय सतना द्वारा 26 जून 2025 तक सतना एवं मैहर जिले में स्थित समस्त आईटीआई में एसआईएस सिक्योरिटी सर्विस का एक दिवसीय प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया जायेगा। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि 20 जून को जनपद पंचायत सोहावल, 23 जून को शासकीय आईटीआई अमरपाटन, 24 जून को जनपद पंचायत मैहर, 25 जून को जनपद पंचायत रामनगर एवं 26 जून 2025 को जिला रोजगार कार्यालय सतना में प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया जायेगा। सिक्योरिटी गार्ड/सुपरवाइजर पद हेतु आयु 19 से 40 वर्ष तथा योग्यता 10वीं या 12वीं उत्तीर्ण बेरोजगार आवेदक अपने मूल रिकार्ड के साथ निर्धारित स्थान पर उपस्थित हो सकते हैं। भर्ती से संबंधित जानकारी के लिए राहुल साहू मोबाइल नम्बर 9131557489 पर सम्पर्क कर सकते है।

दस्तावेजों का परीक्षण 23 जून तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एलके तिवारी ने बताया कि वर्ष 2023 में आयोजित समूह-5 की परीक्षा में चयनित एवं उच्च न्यायालय में याचिका दायर से संबंधित महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता के अभ्यर्थियों के दस्तावेजों का परीक्षण किया जा रहा है। परीक्षा में चयनित अभ्यर्थी 23 जून तक प्रातः 11 बजे से मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय सतना में उपस्थित होकर अपने दस्तावेजों का सत्यापन करा सकते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश के गौ-पालक एवं गौ-शाला संचालकों से करेंगे संवाद

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मुख्यमंत्री निवास पर 20 जून को प्रदेश के गौपालकों एवं गौशाला संचालकों से संवाद करेंगे। साथ ही गौशालाओं को लगभग 90 करोड़ रूपये की राशि अंतरित करेंगे। मुख्यमंत्री निवास पर गौ-शाला सम्मेलन दोपहर 12 बजे से होगा। इस अवसर पर पशुपालन एवं डेयरी विकास राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल भी उपस्थित रहेंगे। सम्मेलन में प्रदेश के समस्त जिलों से शासकीय एवं अशासकीय गौ-शाला संचालक एवं प्रतिनिधि शामिल होंगे। प्रमुख सचिव पशुपालन एवं डेयरी श्री उमाकांत उमराव ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश में पंजीकृत गौ-शालाओं में गौवंश के उचित व्यवस्थापन के लिए आर्थिक अनुदान को रू. 20 प्रति गौ वंश प्रति दिवस से बढाकर रू. 40 प्रति गौ वंश प्रति दिवस किया गया है। इसके अनुसार गौ-शालाओं में पालन किए जा रहे गौ वंश के लिए माह अप्रैल व मई 2025 की अनुदान राशि लगभग 90 करोड़ की किश्त सम्मेलन में जारी की जाएगी। सम्मेलन में आचार्य विद्यासागर जीव दया गौ-सेवा सम्मान योजना के अंतर्गत चयनित गौ-शालाओं एवं संस्थाओं को गौ-सेवा पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे। प्रथम पुरस्कार रुपए 5 लाख, द्वितीय पुरस्कार रुपए 3 लाख, तृतीय पुरस्कार रुपए 02 लाख तथा सांत्वना पुरस्कार 50-50 हजार रुपए के प्रदान किए जाएंगे. गौसेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए व्यक्तिगत श्रेणी में प्रथम पुरस्कार रूपये 01 लाख, द्वितीय पुरस्कार रूपये 50 हजार एवं तृतीय पुरस्कार रूपये 20 हजार का दिया जाएगा। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कामधेनु योजना प्रारंभ की गई है, जिसमें डेयरी व्यवसाय के लिए 25 दुधारू पशुओं से लेकर 200 दुधारू पशुओं तक की योजनाएं स्वीकृत हो सकेंगी।मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा इस योजना के हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र भी वितरित किए जाएंगे. सम्मेलन में नवीन गौ-शालाओं को पंजीयन प्रमाण पत्र तथा म.प्र.गौ-संवर्धन बोर्ड एवं दयोदय महासंघ के सहयोग से हितग्राहियों को ट्रेक्टर, ट्राली वितरण भी किया जाएगा। सम्मेलन में "पशुपालन के क्षेत्र में प्रदेश के बढ़ते कदम" विषय पर एक लघु फिल्म का प्रदर्शन भी होगा।

सतना और मैहर जिले के 7 बीएलओ का दो दिवसीय प्रशिक्षण दिल्ली में

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा जिले में निर्वाचन संबंधी स्वीप गतिविधियों का सोशल मीडिया पर अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किए जाने के निर्देश जारी किए गए हैं। अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि सतना एवं मैहर जिले की विधानसभाओं से एक-एक बीएलओ का 23 एवं 24 जून 2025 को द्वारिका नई दिल्ली में 2 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है। जिसमें विधानसभा क्षेत्र 61 चित्रकूट से बीएलओ राजा भैया सिंगरौल, विधानसभा क्षेत्र 62 रैगांव से यादवेन्द्र सिह, विधानसभा क्षेत्र 63 सतना से विनोद कुमार द्विवेदी, विधानसभा क्षेत्र 64 नागौद से देवेश गुजर तथा विधानसभा क्षेत्र 67 रामपुर बाघेलान से रतनराज साकेत प्रशिक्षण में सम्मिलित होंगे। इसी प्रकार मैहर जिले की विधानसभा क्षेत्र 65 मैहर से बीएलओ मनोज कुमार अवधिया, विधानसभा क्षेत्र 66 अमरपाटन से विनोद कुमार पटेल प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए 22 जून 2025 को वंदे भारत ट्रेन द्वारा खजुराहो से हजरत निजामुद्दीन के लिए रवाना होंगे। नई दिल्ली में 23 एवं 24 जून 2025 को प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत बीएलओ 25 जून को वंदे भारत ट्रेन द्वारा हजरत निजामुद्दीन से खजुराहो के लिए प्रस्थान करेंगे। बीएलओ के आने-जाने ठहरने एवं भोजन आदि का समस्त खर्च भारत निर्वाचन आयोग द्वारा वहन किया जा रहा है। सतना जिले की विधानसभा क्षेत्र 64-नागौद से अनुविभागीय अधिकारी (रा.) एवं निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी जितेन्द्र कुमार वर्मा भी प्रशिक्षण में सम्मिलित होंगे। इस कार्य के सुचारू संचालन के लिए अनुविभागीय अधिकारी (रा.) ग्रामीण रघुराजनगर एलआर जांगड़े को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार आयोग द्वारा 2 जुलाई 2025 को निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी मुख्यालय पर आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण में विधानसभा मुख्यालय स्तर पर पीपीटी के माध्यम से बीएलओ को प्रशिक्षित किया जायेगा। जिसमें सतना एवं मैहर जिले के 1950 बीएलओ आनलाईन प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। इसी अनुर₹ म में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा फोटो निर्वाचक नामावली का सघन पुनरीक्षण का कार्य संपादित किया जा रहा है। जिसके तहत 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके युवक/युवतियों का नाम एवं पात्र छूटे हुए मतदाताओं का नाम फार्म-6 भरकर बीएलओ ऐप के माध्यम से मतदाता सूची में नाम पंजीकरण की कार्यवाही प्रचलित है। साथ ही ऐसे मृत मतदाता एवं स्थाई रूप से स्थानांतरित मतदाताओं का नाम फार्म-7 भरकर मतदाता सूची से नाम हटवाया जा सकता है। यदि मतदाता सूची में किसी प्रकार की त्रुटि है तो ऐसी दशा में मतदाता फार्म-8 भरकर अपने नाम के प्रविष्टि की शुद्धि करा सकते हैं। फोटो निर्वाचक नामावली के आगामी विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण हेतु आयोग द्वारा मतदान केन्द्रों के युक्तियुक्तकरण एवं पहचान की तैयारी के संबंध में मतदान केन्द्रों में 1200 से अधिक मतदाता वाले मतदान केन्द्रों के युक्तियुक्तकरण के संबंध में जिला सतना मैहर की विधानसभाओं के 1950 मतदान केन्द्रों में से 1200 से अधिक मतदाता वाले मतदान केन्द्रों की पहचान कर ली गई है, ऐसे मतदान केन्द्रों की कुल संख्या 216 है।

एअर इंडिया ड्रीमलाइनर का ब्लैक बॉक्स अमेरिका भेजा जाएगा

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद में 12 जून को क्रैश हुए एअर इंडिया विमान का ब्लैक बॉक्स जांच के लिए अमेरिका भेजा जाएगा है। क्रैश हुए बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान का ब्लैक बॉक्स क्रैश के अगले दिन ही रिकवर कर लिया गया था। विमान में आग लगने के बाद ब्लैक बॉक्स इतना डैमेज हो चुका है कि उससे डेटा रिकवर करना मुश्किल है। इसलिए उसे जांच के लिए अमेरिका भेजने का फैसला लिया गया है। अहमदाबाद में 12 जून को लंदन जाने वाली एअर इंडिया की फ्लाइट एआई-171 उड़ान भरने के तुरंत बाद क्रैश हो गई थी। इसमें सवार 241 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि एक यात्री की जान बच गई थी। वहीं, इस घटना में कुल 270 लोग मारे गए थे। अफसरों की निगरानी में अमेरिका जाएगा ब्लैक बॉक्स के 2 हिस्से कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर और फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर को हीट और आग से नुकसान पहुंचा है। देश में ऐसी कोई लैब नहीं है, जहां डेटा रिकवर किया जा सके। इसी वजह से अब इन्हें अमेरिका की नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड की लैब में भेजने का फैसला किया गया है। इसके साथ सरकारी अफसर भी जाएंगे ताकि सुरक्षा और गोपनीयता बनी रहे।

एअर इंडिया को बिना जांचे एयरबस उड़ाने पर चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन एविएशन रेगुलेटर ने एअर इंडिया को 3 एयरबस प्लेन को जांचे बिना उड़ाने पर चेतावनी दी है। क्योंकि जांच में इन प्लेन में खराबी की बात सामने आई है। सरकारी डॉक्यूमेंट्स से मुताबिक, इन विमानों को इमरजेंसी इक्विपमेंट की जांच पेंडिंग होने के बावजूद उड़ाया गया। एयरलाइन ने इन दिक्कतों को दूर करने में भी देरी की। रॉयटर्स की खबर के मुताबिक, वॉर्निंग नोटिस और जांच रिपोर्ट अहमदाबाद प्लेन क्रैश से जुड़ी नहीं है। दोनों इस घटना से कुछ दिन पहले ही भेजा एयरलाइन को भेजे गए थे। डीजीसीए के कहा- मई में एअर इंडिया के 3 एयरबस विमानों की जांच की गई। इसमें पाया गया कि एस्केप स्लाइड के जरूरी इमरजेंसी इक्विपमेंट की इंस्पेक्शन की देरी के बाद भी उन्हें उड़ाया जा रहा था। भारत सरकार में उड़ान योग्यता के डिप्टी डायरेक्टर अनिमेश गर्ग ने जांच रिपोर्ट एअर इंडिया के सीईओ कैम्पबेल विल्सन, एयरलाइन के फ्लाइट एबिलिटी मैनेजमेंट, क्वालिटी मैनेजर और प्लानिंग चीफ को भेजी।

स्टोर रूम पर जज परिवार का ही कंट्रोल था

नई दिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस यशवंत वर्मा के घर से मिले कैश केस की जांच कर रहे पैनल की रिपोर्ट गुरुवार को सामने आई है। 64 पेज की रिपोर्ट में कहा गया है कि हाईकोर्ट जज यशवंत वर्मा और उनके परिवार के सदस्यों का स्टोर रूम पर सीक्रेट या एक्टिव कंट्रोल था। यहीं 14 मार्च की रात आग लगने के बाद बड़ी संख्या में अधजले नोट मिले थे। पैनल की रिपोर्ट में कहा गया है कि इससे जस्टिस वर्मा के बुरे व्यवहार का पता चलता है, जो इतना गंभीर है कि उन्हें हटाया जाना चाहिए।

शाह बोले-देश में अंग्रेजी बोलने वालों को जल्द शर्म आएगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, इस देश में जो लोग अंग्रेजी बोलते हैं, उन्हें जल्द ही शर्म आएगी। ऐसे समाज का निर्माण दूर नहीं है। उन्होंने यह बयान गुरुवार को नई दिल्ली में पूर्व आईएएस आशुतोष अग्निहोत्री की बुक मैं बूंद स्वयं, खुद सागर हूं के विमोचन के मौके पर दिया। शाह ने हिंदी समेत भारतीय भाषाओं के भविष्य पर कहा, अपना देश, अपनी संस्कृति, अपना इतिहास और अपने धर्म को समझने के लिए कोई भी विदेशी भाषा पर्याप्त नहीं हो सकती। अधूरी विदेशी भाषाओं के जरिए संपूर्ण भारत की कल्पना नहीं की जा सकती। मैं अच्छी तरह जानता हूं, यह लड़ाई कितनी कठिन है, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि भारतीय समाज इसे जीतेगा। एक बार फिर स्वाभिमान के साथ हम अपने देश को अपनी भाषाओं में चलाएंगे और दुनिया का नेतृत्व भी करेंगे। अमृत काल के लिए पीएम मोदी ने पंच प्रण की नींव रखी है।पांच प्रतिज्ञाएं 130 करोड़ लोगों का संकल्प बन गई हैं। यही कारण है कि 2047 तक हम टॉप पर होंगे और हमारी भाषाएं इस यात्रा में प्रमुख भूमिका निभाएंगी। शाह ने कहा कि इन पांच प्रतिज्ञाओं में विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना, गुलामी के हर निशान से छुटकारा पाना, अपनी विरासत पर गर्व करना, एकता और एकजुटता के लिए प्रतिबद्ध रहना और हर नागरिक में कर्तव्य की भावना जगाना शामिल है। शाह ने कहा कि देश में प्रशासनिक अधिकारियों की ट्रेनिंग में कुछ बदलाव की जरूरत है। उन्हें शायद ही हमारी व्यवस्था में सहानुभूति

लाने के लिए ट्रेंड किया जाता है। ऐसा शायद इसलिए क्योंकि अंग्रेजों के जमाने से इस ट्रेनिंग मॉडल की प्रेरणा मिली है। उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि अगर कोई शासक या प्रशासक बिना सहानुभूति के शासन करता है, तो वह शासन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता। केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि जब हमारा देश घोर अंधकार के युग में डूबा हुआ था, तब भी साहित्य ने हमारे धर्म, स्वतंत्रता और संस्कृति के दीप जलाए रखे। जब सरकार बदली तो किसी ने इसका विरोध नहीं किया, लेकिन जब भी किसी ने हमारे धर्म, संस्कृति और साहित्य को छूने की कोशिश की तो हमारा समाज उनके खिलाफ खड़ा हुआ और उन्हें हरा दिया। साहित्य हमारे समाज की आत्मा है। शाह के बयान पर इंडियन सेक्युलर फ्रंट विधायक नौशाद सिद्दीकी ने सवाल किया। उन्होंने कहा- शाह बताएं कि हमें कौन सी भाषा बोलनी चाहिए- सिर्फ हिंदी? हमारे देश में बंगाली, हिंदी, अंग्रेजी जो भी उन्हें पसंद हो, बोलेंगे। भारत कई भाषाओं का देश है। लोग अपनी पसंद की कोई भी भाषा बोलने और सीखने के लिए स्वतंत्र हैं। अंग्रेजी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है और इसका ज्ञान होना जरूरी है।

राहुल गांधी का नया पता- लुटियंस जोन का सुनहरी बाग

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी का आज 55वां जन्मदिन है। आज ही राहुल ने सुनहरी बाग रोड में बने टाइप-8 बंगले में अपना सामान शिफ्ट करना शुरू कर दिया है। यह बंगला उन्हें लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष होने के नाते आवंटित किया गया है। संसदीय आवास समिति ने उन्हें 5 सुनहरी बाग रोड, 7 मोतीलाल नेहरू मार्ग और 3 कृष्णा मेनन मार्ग बंगले का ऑप्शन दिया था। इसमें से राहुल ने सुनहरी बाग को चुना। राहुल अभी सोनिया गांधी के साथ 10 जनपथ में रहते हैं। 2023 में उन्होंने 12 तुगलक लेन का बंगला खाली किया था।

जो 19 साल उनके पास

पुणे में रोड एक्सीडेंट, 8 की मौत

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पुणे में बुधवार शाम सड़क हादसे में 8 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में 6 साल का बच्चा और एक महिला शामिल भी हैं। हादसे में 4 लोग घायल भी हुए हैं।

हादसा शाम करीब 6:45 बजे हुआ। पुणे पुलिस ने बताया कि एक्सीडेंट जेजुरी-मोरेगांव रोड पर एक होटल के सामने हुआ। होटल के मालिक और कर्मचारी पिकअप वाहन से फ्रिज उतार रहे थे। तभी पुणे से मोरेगांव जा रही एक कार ने कंट्रोल खो दिया और

सीधे पिकअप से टकरा गई। मृतकों का पोस्टमार्टम हुआ, घायलों का इलाज जारी हादसे में मृतकों की पहचान सोमनाथ रामचंद्र वायसे, रामू संजीवनी यादव, अजय कुमार चव्हाण, अजीत अशोक जाधव, किरण भारत राउत, अश्विनी संतोष, अक्षय राउत के रूप में हुई है। एक मृतक की अब तक पहचान नहीं हुई है।

पुलिस के अनुसार,

अहमदाबाद, वापी में भारी बारिश, घरों-दुकानों में पानी घुसा

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानसून ने देश के 75 फीसदी हिस्से को कवर कर लिया है। गुजरात, राजस्थान और झारखंड में भारी बारिश हो रही है। पूर्वी क्क के 13 जिलों में आज भारी बारिश की चेतावनी है। गुजरात के अहमदाबाद, वापी और राजकोट में गुरुवार को भारी बारिश से सड़क, घरों और दुकानों में पानी भर गया है। सावरकुंडला, राजुला में स्थानीय नदियां उफान पर आ गई हैं। नवसारी, वलसाड, डांग, दमण और दादरा नगर हवेली के लिए रेड अलर्ट जारी किया गया है। राजस्थान के 5 जिलों में भारी बारिश की चेतावनी है। जयपुर, बूंदी और कोटा में भी बारिश हो रही है। बूंदी में 6.7 मिमी बारिश हुई। यहां के सरकारी अस्पताल में पानी भर गया। झारखंड के जमशेदपुर में भारी बारिश के चलते घरों में पानी घुस गया। रांची के सभी स्कूल गुरुवार को बंद रहे। बुधवार को खराब मौसम के कारण रांची से 4 फ्लाइट्स कैंसिल करनी पड़ीं। मध्यप्रदेश के 54 जिलों में मानसून पहुंच गया है। इंदौर में तेज तो भोपाल में रिमझिम बारिश हुई। ग्वालियर और चंबल में भारी बारिश का अलर्ट है। मौसम विभाग ने गुरुवार को गुजरात, ओडिशा, बिहार, छत्तीसगढ़, कोंकण-गोवा, असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, सौराष्ट्र-कच्छ, कर्नाटक और केरल के लिए बारिश का ऑरेंज अलर्ट है।

केदारनाथ रूट पर लैंडस्लाइड से 2 की मौत, ओडिशा में अलर्ट

ऑपरेशन सिंधु- ईरान से रेस्क्यू 110 भारतीय छात्र दिल्ली पहुंचे

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान की उर्मिया मेडिकल यूनिवर्सिटी में पढ़ रहे लगभग 110 भारतीय छात्र सुरक्षित भारत पहुंच गए हैं। इनमें से 90 छात्र कश्मीर के हैं। ईरान-इजराइल जंग में फंसे छात्रों को वापस लाने के लिए सरकार ने ऑपरेशन सिंधु शुरू किया है। भारत पहुंचे छात्रों ने बताया, वहां के हालात हर दिन खराब होते जा रहे हैं। खासकर तेहरान में स्थिति बहुत खराब है। युद्ध अच्छी चीज नहीं है। इंसानियत ही मारी जाती है। ईरान से निकाले गए ये छात्र मंगलवार को आर्मेनिया पहुंचे थे, जहां उन्हें राजधानी येरेवन के होटलों में ठहराया गया। इसके बाद आज इन्हें कतर के रास्ते भारत लाया गया। इंडिगो की एक फ्लाइट आर्मेनिया के येरेवन एयरपोर्ट से इन छात्रों को लेकर कतर की राजधानी दोहा के लिए रवाना हुई थी। इसके बाद एक दूसरी फ्लाइट से इन्हें दोहा से नई दिल्ली के इंदिरा गांधी एयरपोर्ट लाया गया।

मंगलवार को भारतीय विदेश मंत्रालय ने

ट्रम्प ने फिर कहा- भारत-पाक युद्ध रुकवाया

नई दिल्ली/ वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बुधवार को एक बार फिर कहा कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच संभावित युद्ध रुकवाया था। ट्रम्प ने कहा, मैंने युद्ध रुकवाया। मैं पाकिस्तान से प्यार करता हूं। पीएम मोदी एक शानदार व्यक्ति हैं। मैंने उनसे कल रात बात की। हम भारत के साथ एक व्यापार समझौता करेंगे। ट्रम्प ने कहा कि मैंने एक बड़ा युद्ध रोका, लेकिन किसी ने इस बारे में खबर तक नहीं लिखी। ट्रम्प का यह बयान बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फोन पर हुई बातचीत के 12 घंटे बाद आया है। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से फोन पर बातचीत की, जो लगभग 35 मिनट तक चली। बातचीत के दौरान पीएम मोदी ने राष्ट्रपति ट्रम्प को ऑपरेशन सिंदूर के बारे में बताया।विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने इस बात की जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि बातचीत के दौरान पीएममोदी ने स्पष्ट किया कि ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े किसी भी विषय में व्यापार से संबंधित कोई चर्चा नहीं हुई। उन्होंने दोहराया कि पाकिस्तान के कहने पर ही भारत ने सीजफायर किया था। भारत कभी किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को स्वीकार नहीं करता और आगे भी नहीं करेगा।

सोनिया गांधी को अस्पताल से छुट्टी मिली

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी को पेट से जुड़ी समस्या के उपचार के बाद बृहस्पतिवार को सर गंगाराम अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। अस्पताल ने यह जानकारी दी। बीते 15 जून को 78 वर्षीय सोनिया गांधी को इस अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अस्पताल के अध्यक्ष डॉ. अजय स्वरूप के अनुसार, सोनिया गांधी की हालत अब स्थिर है। उन्होंने कहा, ''उन्हें छुट्टी दे दी गई है और अस्पताल से बाहर रहते हुए उनका उपचार जारी रहेगा।'' डॉ. एस नंदी और डॉ. अमिताभ यादव सहित सोनिया का उपचार करने वाले वरिष्ठ चिकित्सकों ने कहा कि उन पर इलाज का अच्छा असर

हुआ है। चिकित्सकों ने एक विज्ञप्ति में कहा, ''उन्हें पेट में संक्रमण के कारण भर्ती कराया गया था, जिसे दवाओं से नियंत्रित कर लिया गया है। उनकी हालत में सुधार हुआ है और अस्पताल बाहर रहते हुए उनकी सेहत पर निगरानी रखी जाएगी।''

कर्नाटक की कांग्रेस सरकार मुस्लिम समुदाय के लिए फिर से बढ़ा रही आरक्षण

बैंगलुरू। कर्नाटक मंत्रिमंडल ने अपनी आवास योजनाओं के तहत मुस्लिम समुदाय के लिए आरक्षण बढ़ाने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। यह कदम राज्य भर में शहरी और ग्रामीण विकास विभागों द्वारा क्रियान्वित सभी आवास योजनाओं पर लागू होगा। आवास मंत्री ज़मीर अहमद खान ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया, जिसमें अल्पसंख्यक समुदायों के लिए आरक्षण को मौजूदा 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 15 प्रतिशत करने का प्रस्ताव है। डीके शिवकुमार ने इस कदम का बचाव करते हुए कहा कि बेशक, हमें जनसंख्या के हिसाब से चलना होगा। शहरी आबादी बहुत बड़ी है और इसमें कई अल्पसंख्यक और गरीब लोग शामिल हैं। शहरी इलाकों में बहुत सारे अल्पसंख्यक मौजूद हैं। आवास खाली पड़े हैं और हम इसे दूसरों को आवंटित नहीं कर सकते।

इसलिए उन्होंने 10-15

मोदी का 3 देशों का दौरा खत्म, भारत लौटे

जगरेब (एजेंसी)। पीएम मोदी पांच दिन का विदेश दौरा पूरा करके गुरुवार को भारत लौट आए हैं। प्रधानमंत्री सबसे पहले 15-16 जून को साइप्रस में रहे। फिर 17 जून को कनाडा पहुंचे, 18 जून को ल7 समिट में हिस्सा लिया। फिर क्रोएशिया गए। बुधवार को क्रोएशिया की राजधानी जगरेब में पीएम मोदी के स्वागत में मंत्र पढ़े गए और भारतीय नृत्य पेश किया गया। इसके बाद पीएम मोदी भारतीय समुदाय के लोगों से

मिले। मोदी ने क्रोएशिया के प्रधानमंत्री आंद्रेज प्लेंकोविच से द्विपक्षीय बातचीत की। ये किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा है। यहां 17 हजार से ज्यादा भारतीय रहते हैं।

1. भारत और क्रोएशिया दोनों लोकतंत्र जैसे मूल्यों से जुड़े हैं प्रधानमंत्री मोदी ने क्रोएशिया की पहली यात्रा पर गर्मजोशी से स्वागत के लिए वहां की सरकार और प्रधानमंत्री आंद्रेज प्लेनकोविच का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि भारत और क्रोएशिया लोकतंत्र, कानून और विविधता जैसे साझा मूल्यों से जुड़े हैं।

2. दोनों देशों के बीच

पश्चिम बंगाल, केरल, पंजाब, गुजरात की 5 सीटों पर उपचुनाव के लिए मतदान, 23 जून को आएंगे नतीजे

नई दिल्ली (एजेंसी)। विधानसभा उपचुनावों को लेकर दिलचस्पी ज़्यादातर राज्यों तक ही सीमित रहती है, खासकर तब जब मुकाबला किसी बड़े नेता से न जुड़ा हो। हालांकि, चार राज्यों में फैली 5 सीटों के लिए आज होने वाले विधानसभा उपचुनावों पर 23 जून को नतीजे आने के बाद सभी की नज़र रहेगी - क्योंकि यह पहलगाम आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर के बाद पहला चुनावी मुकाबला होगा - भारत की सैन्य प्रतिक्रिया जिसमें पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आतंकी शिविरों पर हवाई और ज़मीनी हमले शामिल थे। पंजाब में लुधियाना पश्चिम विधानसभा सीट पर उपचुनाव के लिए मतदान बृहस्पतिवार सुबह कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शुरू हो गया। अधिकारियों ने बताया कि मतदान सुबह सात बजे शुरू हुआ जो शाम छह बजे तक जारी रहेगा।

देश में कोरोना से 116 मौतें, 6 हजार एक्टिव केस

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कोरोना वायरस के एक्टिव केसों की संख्या घटकर 5976 हो गई है। बीते 24 घंटे में 507 मरीज रिकवर हुए हैं। वहीं 40 नए केस भी सामने आए हैं। स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक, जनवरी 2025 से लेकर अब तक नए वैरिएंट से 116 मौतें हुई हैं। बुधवार को 3 लोगों ने जान गंवाई है। दिल्ली में 2 और केरल में एक मौत हुई है। केरल में सबसे ज्यादा 1309 एक्टिव केस हैं। सबसे ज्यादा मौतें भी केरल में 37 हुई हैं। गुजरात में 1046 और पश्चिम बंगाल में 747 मामले हैं। नया वैरिएंट देश के 32 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैल गया है। उत्तर प्रदेश- उत्तर प्रदेश सरकार ने कोविड-19 के बढ़ते मामलों को देखते हुए सावधानी बरतने का निर्देश जारी किया है। प्रमुख स्वास्थ्य अधिकारियों ने सभी अस्पतालों को जरूरी दवाएं, पीपीई किट, जांच सुविधाएं, आइसोलेशन बेड, ऑक्सीजन सिलेंडर, आईसीयू और वेंटिलेटर जैसी सुविधाओं को तैयार रखने को कहा है।

केरल- स्वास्थ्य विभाग ने अस्पतालों को कोविड-19 और इन्फ्लूएंजा के लक्षणों वाले मरीजों का इलाज करते समय जून 2023 में जारी की गई कोविड गाइडलाइन पालन करने के निर्देश दिए गए हैं। अस्पतालों में सभी को मास्क लगाना अनिवार्य है। साथ ही जुकाम, खांसी और बुखार जैसे लक्षण वाले मरीजों का कोविड टेस्ट अनिवार्य कर दिया गया है।

कर्नाटक- गुलबर्गा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज ने में 25 बेड का कोविड वार्ड बनाया गया है। इनमें से पांच-पांच बेड ड्डष्ट (वेंटिलेटर समेत), हाई डिपेंडेंसी यूनिट और पांच प्रेग्नेंट महिलाओं के लिए हैं। बाकी 10 नॉर्मल बेड हैं।

थरूर बोले- कांग्रेस लीडरशिप के कुछ लोगों से मतभेद, सब जानते हैं किसके बारे में कह रहा हूं, केरल उपचुनाव के बाद चर्चा करेंगे

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा कि पार्टी के कुछ नेताओं के साथ उनके मतभेद हैं। थरूर गुरुवार को तिरुवनंतपुरम में पत्रकारों से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वे लोग कौन हैं, जिनके बारे में मैं बात कर रहा हूं। उन्हें आप (मीडिया वाले) अच्छे से जानते हैं क्योंकि उनमें से कुछ मुद्दे सार्वजनिक डोमेन में हैं। थरूर ने आगे कहा कि कांग्रेस पार्टी और उसके सिद्धांत उन्हें पसंद हैं। 16 साल तक पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम किया है और वे उन्हें अपना

करीबी दोस्त और भाई मानते हैं। हालांकि थरूर ने यह स्पष्ट नहीं किया कि उनके मतभेद नेशनल स्तर के नेताओं के साथ हैं या राज्य स्तर के। तिरुवनंतपुरम के सांसद ने संकेत दिया कि उपचुनाव के नतीजों के बाद वह इन मतभेदों के बारे में बात कर सकते हैं। थरूर बोले- मुझे केरल उपचुनाव में प्रचार के लिए नहीं बुलाया केरल की नीलांबुर विधानसभा सीट पर गुरुवार को उपचुनाव हो रहे हैं। इन चुनावों के लिए प्रियंका गांधी भी प्रचार के लिए गईं थीं। जब थरूर से पूछा गया कि, वे चुनाव अभियान में शामिल क्यों नहीं हुए, तो उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें इसके लिए इनवाइट नहीं किया गया था। जबकि पिछले साल वायनाड में हुए उपचुनाव में उन्हें बुलाया गया था।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ अपनी हालिया बातचीत के बारे में थरूर ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के सिलसिले में जो डेलीगेशन कई देशों में गए थे और वहां क्या चर्चा हुई, इस बारे में हमारी पीएम से बात हुई।

संक्षिप्त समाचार

वैभव के बल्लेबाजी कौशल को देखकर हैरान हैं बटलर

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज जोस बटलर ने 14 साल के उभरे हुए भारतीय क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी की जमकर प्रशंसा की है। बटलर ने कहा कि इतनी कम उम्र में वैभव जिस प्रकार से बल्लेबाजी करते हैं उसे देखकर मुझे हैरानी होती है। बटलर ने कहा कि जिस प्रकार वैभव ने आईपीएल में आक्रामक बल्लेबाजी करते हए 206 के स्ट्राइक रेट से केवल सात पारियों में 252 रन बनाए वह आसान काम नहीं है। इस दौरान इस बल्लेबाज ने 35 गेंदों पर ही शतक लगा दिया था। वैभव आईपीएल में जहां राजस्थान रॉयल्स से खेल रहे थे। वहीं बटलर गुजरात टाइटंस टम में शामिल थे। बटलर ने स्टुअर्ट ब्रॉड के साथ बातचीत के दौरान कहा, हमारे खिलाफ 35 गेंदों में शतक वाली वैभव की पारी बहुत ही शानदार थी जबकि हमारी यहां मोहम्मद सिराज, , प्रसिद्ध कृष्णा के अलावा राशिद खान जैसा स्पिनर था पर इसके बाद भी वैभव ने लंबे छक्के लगाए। उन्होंने इसके बाद चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के खिलाफ भी एक आक्रामक जबकि सीएसके में आर अश्विन और रवींद्र जडेजा जैसे अनुभवी स्पिनर हैं। वैभव की बल्लेबाजी का सबसे सकारात्मक पक्ष ये है कि वह निडर होकर खेलता है और ये नहीं देखता कि कौन सा गेंदबाज सामने है। बटलर ने कहा, वास्तव में जब उसने आईपीएल में अपनी पहली गेंद पर छक्का मारा। तो उसने थोड़ी जगह बनायी और गेंद को लॉन्ग ऑफ के ऊपर से मार दिया। उसके खेल में निडरता थी जो काफी कम खिलाड़ियों में दिखती है।

प्रीमियर लीग का फुल शेड्यूल जारी

मुम्बई एजेंसी। बुधवार को आगामी 2025-26 सीजन के लिए प्रीमियर लीग कार्यक्रमों की घोषणा कर दी गई। आगामी 15 अगस्त से इन कार्यक्रमों का आगाज होगा। जहां डिफेंडिंग चैंपियन लिवरपूल अपने पहले मैच में एनफील्ड में बोर्नमाउथ से भिड़ेगा। वहीं इस बीच, मैनचेस्टर यूनाइटेड को ओल्ड ट्रैफर्ड में आर्सेनल के खिलाफ खेलना होगा। यूनाइटेड के मैनचेस्टर चचेरे भाई, सिटी, मोलिनक्स स्टेडियम में वॉल्व्स के साथ भिड़ेंगे। सुंदरलैंड आठ साल बाद प्रीमियर लीग में वापस आ गया है। शेफील्ड यूनाइटेड के खिलाफ प्ले-ऑफ जीतने के बाद, अब वह स्टेडियम ऑफ लाइट में शीर्ष स्तर की कार्रवाई का आनंद लेना चाहेगा। वहीं बोर्नमाउथ के खिलाफ़ शुरूआत के बाद, लिवरपूल के खिताब की रक्षा का परीक्षण शुरू में ही हो जाएगा, दूसरे सप्ताह में न्यूकैसल की एक चुनौतीपूर्ण यात्रा के बाद आर्सेनल के खिलाफ़ एक ब्लॉकबस्टर घरेलू मुकाबला होगा। आर्सेनल के लिए, शुरुआत और भी ज़्यादा कठिन है - उन्हें अपने पहले छह मैचों में मैनचेस्टर यूनाइटेड, लिवरपूल, मैनचेस्टर सिटी और न्यूकैसल का सामना करना पड़ेगा। गनर्स, जो लगातार तीसरे सीज़न में उपविजेता रहे, को पहले दिन से ही अपने सबसे तेज़ प्रदर्शन की ज़रूरत होगी। पेप गार्डियोला के नेतृत्व में अपने सातवें लीग खिताब की तलाश में मैनचेस्टर सिटी 16 अगस्त को वॉल्व्स के खिलाफ़ अपने पहले मैच की शुरुआत करेगी।

शेयर बाजार में रही गिरावट

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार की गुरुवार को कमजोर शुरुआत हुई है। दुनिया भर के मिले-जुले संकेतों के बीच ही ईरान-इज़रायल के बीच संघर्ष बढ़ने से बाजार में अस्थिरता आई है। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स आज सुबह 98 अंक टूटकर 81,347 पर पहुंच गया। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 24 अंकों की गिरावट के साथ ही 24,788 पर कारोबार कामकाज करता दिखा। आज सुबह कारोबार के दौरान निफ्टी में टाइटन कंपनी, आयशर मोटर्स, श्रीराम फाइनेंस, कोटक बैंक, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, हीरो मोटोकॉर्प और टाटा मोटर्स जैसे शेयरों में 1 फीसदी तक की बढ़त रही जबकि टेक महिंद्रा, अदाणी पोर्ट्स, एचसीएल टेक, इंफोसिस, इंडसइंड बैंक, हिंडाल्को और टीसीएस के शेयरों में गिरावट आई। सुबह निफ्टी मिडकैप इंडेक्स 0.04 फीसदी और निफ्टी स्मॉलकैप इंडेक्स 0.18फीसदी की हल्की बढ़त के साथ कारोबार कर रहे थे। निफ्टी पीएसयू बैंक इंडेक्स में 0.36 फीसदी और निफ्टी आईटी इंडेक्स में 0.67फीसदी की गिरावट दर्ज की गयी। वहीं दूसरी ओर, निफ्टी ऑटो इंडेक्स 0.44 फीसदी की बढ़त आई। बाजार में इस गिरावट का कारण अमेरिका के फेडरल रिजर्व का ब्याज दरों को यथावत बनाए रखना, इजरायल और ईरान के बीच बढ़ता तनाव, निफ्टी एफएंडओ की एक्सपायरी आदि रही। सुबह करीब 7:30 बजे गिफ्ट निफ्टी वायदा 60 अंकों की गिरावट के साथ 24,766 के स्तर पर ट्रेड कर रहा था, जो बाजार में नकारात्मक शुरुआत का संकेत दे रहा है। एशिया-पैसिफिक बाजारों में भी गिरावट दर्ज की गयी है। निवेशकों की नजर एक ओर जहां अमेरिका की मौद्रिक नीति पर है, वहीं दूसरी ओर इजरायल-ईरान संघर्ष को लेकर बाजार टूटा है। जापान का निक्केई इंडेक्स 0.63 फीसदी गिरा, टोपिक्स इंडेक्स 0.44 फीसदी गिरा, कोरिया का कोस्पी शुरू में बढ़त के बाद 0.18 फीसदी नीचे आया। ऑस्ट्रेलिया का एएसएक्स 200 में भी गिरावट रही। इस बीच, अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों को चौथी बार 4.25फीसदी से 4.50 फीसदी के स्तर पर बनाए रखा। फेड अधिकारियों का मानना है कि भले ही आर्थिक अनिश्चितता थोड़ी कम हुई हो पर 2025 में दो बार दरों में कटौती की संभावना बनी हुई है। अमेरिकी शेयर बाजार बुधवार को मिश्रित रुख रुख के साथ बंद हुए। डाउ जोन्स 0.10 फीसदी गिरा, एसएंडपी 500 में 0.03फीसदी की हल्की गिरावट रही, नैस्डैक कंपोजिट 0.13फीसदी की बढ़त के साथ बंद हुआ। वहीं गत दिवस भी भारतीय बाजार गिरावट पर बंद हुआ था।

सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट

नई दिल्ली (एजेंसी)। घरेलू बाजार में गुरुवार को सुबह सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट आई है। इन दोनो के वायदा भाव आज नीचे आये हैं। युबह घरेलू बाजार में सोने की कीमत 99,300 रुपये, जबकि चांदी 1,08,400 रुपये थी। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने और चांदी की कीमतों में कमी आई है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त अनुबंध 335 रुपये टूटकर 99,202 रुपये के भाव पर खुला। इसका पिछला बंद भाव 99,537 रुपये था। एक समय यह अनुबंध 247 रुपये नीचे आकर 99,290 रुपये के भाव पर था। ये 99,304 रुपये के भाव पर दिन के उच्च और 99,152 रुपये के भाव पर दिन के निचला स्तर पर पहुंचा। सोने के वायदा भाव इस साल 1,01078 रुपये के भाव पर सर्वोच्च स्तर पर पहुंचे थे। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत भी कमजोर रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क जुलाई अनुबंध 405 रुपये नीचे आकर 1,08,161 रुपये पर खुला। वहीं इसका पिछला बंद भाव 1,08,566 रुपये था। एक समय यह अनुबंध 179 रुपये टूटकर 1,08,387 रुपये के भाव पर कामकाज कर रहा था। दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में आज सोने चांदी के वायदा भाव में कमी आई है। कामेक्स पर सोना 3,387.10 डॉलर प्रति औंस पर खुला। इसका पिछला बंद भाव 3,408.10 डॉलर प्रति औंस था। वहीं एक समय यह 15.50 डॉलर की कमी के साथ ही 3,392.60 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कामकाज कर रहा था। सोने के वायदा भाव इस साल 3,509.90 डॉलर के शीर्ष स्तर पर पहुंचे हैं जबकि कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 36.75 डॉलर के भाव पर खुले। इसका बंद भाव 36.91 डॉलर था।

रुपया गिरावट पर बंद

मुंबई (एजेंसी)। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बुधवार को भारतीय रुपया 45 पैसे की गिरावट के साथ ही 86.49 पर बंद हुआ। वहीं गत दिवस रुपया कच्चे तेल की कीमतों में तेजी और मजबूत डॉलर के दबाव को दरकिनार करते हुए रुपया मंगलवार को शुरुआती कारोबार में 11 पैसे की बढ़त के साथ 85.93 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया, डॉलर के मुकाबले 85.96 पर खुला। फिर 85.93 प्रति डॉलर पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव से 11 पैसे की बढ़त दिखाता है।रुपया मंगलवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 86.04 पर बंद हुआ था।

श्रेयस होते तो भारतीय टीम के लिए बदलाव का सामना करना आसान होता - नाइट

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व सलामी बल्लेबाज निक नाइट ने भारतीय बल्लेबाज श्रेयस अय्यर की सराहना करते हुए कहा है कि उन्हें टीम में रखा जाना चाहिये था। नाइट के अनुसार रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे खिलाड़ियों के नहीं होने से बदलाव के दौर से गुजर रही भारतीय टीम को श्रेयस के रहने से लाभ होता। नाइट के अनुसार श्रेयस एक अच्छे बल्लेबाज जो जो मध्यक्रम को संभाल सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस दौरे में भारतीय टीम ने चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव को शामिल कर टीम किया है। वह टीम के लिए एक्स फैक्टर साबित होंगे। अय्यर के टीम का हिस्सा नहीं होने के कारण नाइट को कुलदीप और युवा बल्लेबाज साई सुदर्शन से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीदें हैं। सुदर्शन के लीड्स में पहले टेस्ट में डेब्यू करने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि अनुभवी बल्लेबाज लोकेश राहुल को इस दौरे में अहम जिम्मेदारी संभानली होगी। उनके ऊपर एक प्रकार से बल्लेबाजी टिकी होगी। उनके अलावा एक दो खिलाड़ियों को छोड़ दें तो अन्य सभी बल्लेबाज नये हैं और उनके पास अनुभव नहीं है। ऐसे में शीर्ष क्रम को बेहतर बल्लेबाजी करनी होगी जिससे कि मध्यक्रम पर दबाव न आये। साथ ही कहा कि अगर भारतीय टीम को ये सीरीज जीतनी है तो उसके गेंदबाजों को 20 विकेट लेने होंगे। भारतीय टीम साल 2007 के बाद यहां एक भी सीरीज नहीं जीती है।

ऐसे में उसके लिए ये सीरीज बेहद अहम मानी जा रही है नाइट ने इस बात पर भी जोर दिया कि अगर भारत को 2007 के बाद इंग्लैंड में अपनी पहली सीरीज जीतने है तो 20 विकेट लेना अहम होगा। इंग्लैंड के लिए 17 टेस्ट और 100 एकदिवसीय मैच खेलने वाले 55 साल के नाइट नहीं चाहते कि भारत अपनी बल्लेबाजी को मजबूत के लिए गेदंबाजी से समझौता करे।

विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप की ब्रांड दूत बनीं कंगना रनौत

नई दिल्ली एजेंसी। अभिनेत्री सह राजनीतिज्ञ कंगना रनौत को बुधवार को सितंबर-अक्टूबर में यहां होने वाली विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप का ब्रांड दूत नियुक्त किया गया। 'फैशन' और 'क्वीन' जैसी फिल्मों में अपने अभिनय के लिए प्रशंसा बटोरने वाली 39 वर्षीय कंगना वर्तमान लोकसभा में हिमाचल प्रदेश के मंडी निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। कंगना ने भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा, ''भारत के पैरा एथलीट हर दिन क्या संभव है, इसे फिर से लिख रहे हैं। मैं उनका समर्थन करने और उनकी अविश्वसनीय उपलब्धियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करने के लिए बहुत सम्मानित महसूस कर रही हूं। पैरा खेल केवल प्रतिस्पर्धा के बारे में नहीं है- यह साहस के बारे में हैं और मुझे हमारे चैंपियन खिलाड़ियों के पीछे खड़े होने पर गर्व है।'' पीसीआई के अध्यक्ष और भारतीय जनता पार्टी के नेता देवेंद्र झझारिया ने कहा, ''भारत के खिलाड़ियों के प्रति उनका जुनून, प्रभाव और प्रतिबद्धता उन्हें नयी दिल्ली 2025 विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए एक आदर्श दूत बनाती है।

ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर से प्रेरित हैं साई सुदर्शन

लंदन (एजेंसी)। युवा बल्लेबाज साई सुदर्शन ने कहा है कि वह ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर से प्रेरित हैं। सुंदर को देखकर ही उन्हें आगे बढ़ने और भारतीय टीम में जगह बनाने की प्रेरणा मिली। सुदर्शन इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में अपना डेब्यू कर सकते हैं जिसको लेकर वह उत्साहित हैं। वहीं सुंदर ने अब तक तीन एकदिवसीय और एक टी20आई में भारत का प्रतिनिधित्व किया है, जिसमें दक्षिण अफ्रीका में दो एकदिवसीय अर्धशतक शामिल हैं। सुदर्शन ने घरेलू क्रिकेट के बाद आईपीएल में सबसे ज्यादा रन बनाये जिसके बाद ही उन्हें इंग्लैंड दौरे के लिए टीम में जगह मिली। आईपीएल में सुदर्शन ने 16 पारियों में एक शतक और छह अर्धशतकों के साथ 759 रन बनाए। उनकी बेहतर बल्लेबाजी तकनीक से चयनकर्ता प्रभवित दिखे। सुदर्शन घरेलू क्रिकेट में सुंदर से जूनियर हैं क्योंकि सुंदर तमिलनाडु की ओर से घरेलू क्रिकेट खेलते हैं, वहीं सुदर्शन उनके जूनियर हैं। आईपीएल स्टार बनने से पहले सुदर्शन ने तमिलनाडु प्रीमियर लीग में शानदार प्रदर्शन किया, जहां वह 30 पारियों में 56.65 की औसत, एक शतक और 13 अर्द्धशतक के साथ 1,303 रन बनाकर शीर्ष रन बनाने वालों में 10वें नंबर पर हैं। सुंदर को आदर्श मानने को लेकर सुदर्शन ने कहा कि वह सुंदर की तेजी से की गयी प्रगति से प्रभावित रहे हैं। एक वीडियो में सुदर्शन ने कहा, जब मैं छोटा था, तब से ही वह मेरी प्रेरणा रहे हैं। मैंने उनके खिलाफ कुछ मैच खेले हैं, इसलिए यह हमेशा खास होता है। ईमानदारी से कहूं तो हमने उनसे बहुत प्रेरणा ली है। मैंने एक या दो बार सुंदर के खिलाफ अभ्यास किया है, जिस तरह से वह आगे बढ़े और जिस तरह से उन्होंने देश के लिए खेला, वह वाकई बहुत तेज था, इसलिए मैंने इसे अपने दिमाग में रखा।

एनसीआर में खरीद सकते हैं 8 लाख का भू-खंड, पैसे भी किश्तों में चुकाना है

नोएडा (एजेंसी)। यमुना प्राधिकरण ने इसके लिए सबसे पुराने आवासीय सेक्टर-18 और 20 में जगह चिह्नित कर ली है। भूखंड की कीमत 7.5 लाख से लेकर 8 लाख रुपये के बीच होगी। योजना में सफल होने वाले आवेदक ढाई मंजिला मकान बना सकेंगे। लोगों को किस्तों में रुपये जमा करने की सुविधा प्रदान की जाएगी। महत्वपूर्ण शर्त यह रखी जाएगी कि 10 साल तक भूखंड या मकान बेच नहीं सकेंगे। ग्रेटर नोएडा के यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोग भी आवास बना सकेंगे। इस वर्ग के लोगों के लिए 30 वर्गमीटर के छोटे भूखंडों की योजना शुरू आएगी। पहले चरण में कुल 4288 भूखंडों की योजना निकाली जाएगी। इस प्रस्ताव को बोर्ड ने बुधवार को मंजूरी दे दी। इस योजना में गौतमबुद्ध नगर और उत्तर प्रदेश के मूल निवासी ही आवेदन कर सकेंगे। साथ ही, तीन लाख रुपये प्रतिवर्ष आय वाले लोग ही पात्र होंगे। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए लाई जाने वाली इस योजना में भारतीय सेना के जवान, पूर्व सैनिकों, युद्ध में शहीद हुए जवान की विधवा, दिव्यांगजनों को 5-5 फीसदी आरक्षण का लाभ दिया जाएगा। यमुना प्राधिकरण ने 64.7 प्रतिशत के बकायेदार आवंटियों को एक बार फिर मौका दिया है। इनके लिए एक जुलाई से 31 अगस्त तक ओटीएस योजना शुरू की जाएगी। बता दें कि इससे पूर्व करीब छह हजार यह योजना शुरू की जा सकी है, जिससे प्राधिकरण को 551.55 करोड़ रुपये प्राप्त हुए। अब भी ग्रुप हाउसिंग को छोड़कर करीब 7917 बकायेदार आवंटियों पर प्राधिकरण का 4948 करोड़ रुपये बकाया हैं। इनके लिए प्राधिकरण ओटीएस योजना शुरू करेगा। थाने में अधिक कमरे बनाए जा सकेंगे = एयरपोर्ट की सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए यहां पर 1000 वर्गमीटर में थाना बनाया जाना है। ग्रुप हाउसिंग भूखंड के आवंटी एसडीएस बिल्डर के आवेदन पर बोर्ड ने निर्णय लिया है कि 30 जून 2025 तक सभी मुकदमों की वापसी की रिपोर्ट के बाद रियायत पर निर्णय लिया जाएगा। इसमें बिल्डर ने अमिताभकांत समिति के तहत रियायत की मांग की थी। पिछले बोर्ड ने आदेश दिया था कि बिल्डर की ओर से किए गए मुकदमों को वापस लेने के बाद ही प्रस्ताव पर विचार किया जाएगा। इसमें बिल्डर के सभी नौ मुकदमों में अब तक महज तीन ही रिपोर्ट ही मिली है, जिसमें उसने मुकदमा वापस लिया है। सभी मुकदमों की रिपोर्ट के लिए 30 जून की समयसीमा तय की गई है। सेक्टर-17ए स्थित सुपरटेक लिमिटेड ने भी प्राधिकरण ने पांच प्रतिशत जमा कर अमिताभ कांत समिति की सिफारिशों का लाभ मांगा था, जिसे बोर्ड ने खारिज कर दिया। बिल्डर को पूरा 25 प्रतिशत बकाया चुकाना होगा, जिसके बाद ही लाभ मिल सकेगा। बिल्डर को 2010 में 100 एकड़ भूखंड का आवंटन किया गया था। परियोजना पर कुल 472 करोड़ रुपये बकाया हैं।

हरभजन, रैना सहित चार पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुपर60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट में भाग लेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह और सुरेश रैना सहित चार पूर्व भारतीय क्रिकेटर 5 से 16 अगस्त तक होने वाले सुपर60 यूएसए लीजेंड्स क्रिकेट टूर्नामेंट में खेलते नजर आयेंगे। इस टूर्नामेंट में हरभजन और रैना के अलावा शिखर धवन व रॉबिन उथप्पा भी खेलेंगे। इन सभी पूर्व क्रिकेटरों ने कहा कि इस टूर्नामेंट में खेलने का अवसर मिलने से वह उत्साहित हैं। हरभजन ने कहा, मैं सुपर 60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट का हिस्सा बनकर बेहद खुश हूं। यह एक अनूठा और विशिष्ट प्रारूप है जो खेल में नयापन लाने का वादा करता है। अंतरराष्ट्रीय दिग्गजों की भागीदारी के साथ, यह टूर्नामेंट अमेरिका में क्रिकेट की लोकप्रियता बढ़ाएगा। लोकप्रिय बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। वहीं रैना ने कहा, मैं सुपर 60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट का हिस्सा बनकर उत्साहित हूं, जो विश्व स्तरीय प्रतिभाओं को एक साथ लाता है। इस तरह का टूर्नामेंट अमेरिका में क्रिकेट के विकास में अहम भूमिका निभाएगा और मुझे इसका हिस्सा होने पर गर्व है। धवन ने कहा, सुपर 60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट में शामिल होना बढ़ते क्रिकेट समुदाय में प्रशंसकों से जुड़ने का एक अच्छा अवसर है। अंतरराष्ट्रीय सितारों और एक नए आकर्षक प्रारूप के साथ इस आयोजन से अमेरिका में क्रिकेट को मुख्यधारा में लाने की राह बनेगी। उथप्पा ने कहा, सुपर 60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट प्रतिस्पर्धा और नवाचार दोनों के मामले में एक बेहतरीन मंच है। इसका अनूठा प्रारूप खेल में एक नया आकर्षण लाता है और नए प्रशंसकों को आकर्षित करने की बहुत संभावना है।

इंग्लैंड के खिलाफ बुमराह सहित तेज गेंदबाजों को निभानी होगी अहम जिम्मेदारी

मुम्बई (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ लीड्स में शुरुवार से इंग्लैंड के खिलाफ शुरु हो रहे पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में भारतीय टीम के तेज गेंदबाजों को निर्णायक भूमिका निभानी होगी। इसका कारण ये है कि इंग्लैंड की उछाल भारी पिचों पर तेज गेंदबाज प्रभावी साबित होते रहे हैं। = पिछले कुछ साल भारतीय टीम के अच्छे प्रदर्शन में तेज गेंदबाज की अहम भूमिका रहे । ऐसे में इंग्लैंड में साल 2007 के बाद जीत हासिल करना चाह रही भारतीय टीम की ओर से जसप्रीत बुमराह सहित सभी अन्य गेंदबाजों को 20 विकेट लेने होंगे। रोहित शर्मा और विराट कोहली के संन्यास के बाद टीम की बल्लेबाजी में अनुभव की कमी है। ऐसे में इस कमी को गेंदबाज ही पूरी कर सकते हैं। भारत और इंग्लैंड के बीच 20 जून से लीड्स में पांच टेस्ट मैचों की सीरीज की शुरुआत होगी जिसमें बुमराह के अलावा मो सिराह , प्रसिद्ध कृष्णा , अर्शदीप सिंह सिंह पर गेंदबाजी की जिम्मेदारी होगी। बुमराह को इसमें आगे बढ़कर नेतृत्व करना होगा। बुमराह की गेंदबाजी क्षमता और अनुभव को देखते हुए उनसे टीम को बहुत उम्मीदें हैं। अपनी गति और दिशा को बदलकर वह बल्लेबाजों को हैरान करने में माहिर हैं। बुमराह नई गेंद से विकेट लेने और विपक्षी टीम पर दबाव बनाने का तरीका भी जानते है। हालांकि बुमराह सभी 5 टेस्ट मैचों के लिए उपलब्ध नहीं होंगे लेकिन उन्की मौजूदगी से टीम को मजबूती मिलेगी। बुमराह के साथ सिराज, कृष्णा व अर्शदीप सिंह पर भी बेहतर प्रदर्शन की जिम्मेदारी रहेगी। सिराज इस दौरान आगे बढ़कर भूमिका निभाते नजर आ सकते हैं जिससे वह बुमराह की अनुपस्थिति में तेज गेंदबाजी की कमान संभाल सकें। मोहम्मद सिराज के अलावा शार्दुल ठाकुर और प्रसिद्ध कृष्णा के लिए यह एक बड़ा अवसर है कि वे अपने खेल से प्रभावित करें। अर्शदीप को भी इस टेस्ट सीरीज में डेब्यू का अवसर मिला सकता है। इंग्लैंड में बुमराह ने अब तक 9 मैचों में 37 विकेट लिए हैं जबकि सिराज ने 6 मैचों में 23 विकेट लिए है।

डब्लयूटीसी फाइनल की हार के लिए हेजलवुड हैं दोषी - जॉनसन

राष्ट्रीय टीम की जगह आईपीएल खेलने को प्राथमकिता दी

मेलबर्न (एजेंसी)। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर मिचेल जॉनसन ने विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्लयूटीसी) फाइनल में ऑस्ट्रेलिया को मिली हार के लिए तेज गेंदबाज जोस हेजलवुड को दोषी करार दिया है। जॉनसन के अनुसार हेजलवुड ने खराब फिटनेस के बाद भी डब्लयूटीसी फाइनल के ठीक पहले आईपीएल खेला था जिससे फाइनल के लिए वह ठीक से तैयारी नहीं कर पाये। जॉनसन ने कहा कि हेजलवुड ने पैसे के लिए अपनी राष्ट्रीय टीम की जगह आईपीएल टीम आरसीबी को अधिक प्राथमिकता दी। वह प्लेऑफ के लिए ही ऑस्ट्रेलिया से वापस भारत गये थे। आरसीबी ने प्लेऑफ के क्वालिफायर-1 में पंजाब किंग्स को हराकर फाइनल में जगह बनाई और फिर फाइनल में इसी टीम को हराकर अपना पहला आईपीएल खिताब जीता। इस दौरान हेजलवुड टीम के लिए विकेट लेने वाले मुख्य गेंदबाज साबित हुए। भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष के कारण आईपीएल 2025 बीच में स्थगित कर दिया गया था। जिसके बाद 17 मई से इसकी फिर से शुरूआत हुई। ऐसे में अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के अधिकतर खिलाड़ी डब्लयूटीसी फाइनल के कारण भारत वापसी नहीं लौटे पर हेजलवुड भारत लौट गये। जॉनसन ने कहा कि, हेजलवुड पिछले कुछ समय से फिटनेस की समस्याओं से संघर्ष कर रहे थे जो आईपीएल के कारण और बढ़ गयीं। ऐसे हालातों में उन्हें राष्ट्रीय टीम के साथ रहना था पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। हेजलवुड ने फाइनल में पहली पारी में 15 ओवर किये और उन्हें केवल एक विकेट मिला। इस पारी में कमिंस ने 6 विकेट लिए थे। वहीं दक्षिण अफ्रीका की दूसरी पारी में भी उन्हें एक ही विकेट मिला, वो भी तब मिला जब मैच हाथ से निकल गया था। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अब भविष्य को देखते हुए हेजलवुड, मिशेल स्टार्क, हेजलवुड, पैट कमिंस और नाथन लियोन के विकल्प देखने होंगे क्योंकि ये खिलाड़ी एशेज के बाद संन्यास ले सकते हैं, ऐसे में इनके भरोसे रहना टीम के लिए सही नहीं है।

रायपुर में पकड़ाए बांग्लादेशी दंपती का रीवा से जुड़ा तार

आरोपी ने 10वीं की फर्जी अंक सूची त्योंथर के विद्यालय से बनवाई, जिसके आधार पर बन गया भारत का नागरिक

रीवा एसपी बोले- ऑफिशियल जानकारी का इंतजार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। छत्तीसगढ़ के रायपुर में पकड़े गए बांग्लादेशी के तार रीवा से जुड़े हुए हैं। आरोपी ने 10वीं की फर्जी अंक सूची त्योंथर के विद्यालय से बनवाई थी जिसके आधार पर वह भारत का नागरिक बन गया। छत्तीसगढ़ के रायपुर में पुलिस ने 13 जून को एक बांग्लादेशी परिवार को गिरफ्तार किया था। आरोपी दिलावर खान मूलतः बांग्लादेश के मुसीगंज इलाके का रहने वाला है और 16 साल पहले बॉर्डर पार करके वह रायपुर आया था। करीब साल भर बाद उसने अपनी पत्नी को भी यहां पर बुलवा लिया। रायपुर पुलिस को पकड़े गए आरोपी के पास से मिली 10वीं की अंक सूची रीवा जिले के त्योंथर विद्यालय की बताई जा रही है।

छत्तीसगढ़ के रायपुर में पकड़े गए बांग्लादेशी दंपती का रीवा कनेक्शन निकल कर सामने आया है। जहां छत्तीसगढ़ की रायपुर पुलिस बांग्लादेशी घुसपैठियों की कुंडली खंगालने में लगी हुई है। जांच में पुलिस को पता लगा है कि बांग्लादेशी घुसपैठ दंपती की फर्जी मार्कशीट रीवा के त्योंथर से बनवाई गई थी। लिहाजा मामले की पड़ताल के लिए बहुत जल्द रायपुर पुलिस रीवा में भी दस्तक दे सकती है।

इस पूरे मामले में रीवा एसपी विवेक सिंह ने कहा अभी इस मामले को लेकर कुछ सूत्रों से यही जानकारी मिली है कि कुछ बांग्लादेशी घुसपैठ छत्तीसगढ़ की रायपुर पुलिस ने पकड़े हैं। जिनकी जाली मार्कशीट रीवा के त्योंथर से संबंधित किसी स्कूल की बताई गई है। हमें अभी इस संबंध में कोई ऑफिशियल जानकारी शेयर नहीं की गई है। इस संबंध में रायपुर पुलिस को हमारी जो भी मदद आवश्यक होगी। हम वो पूरी मदद करेंगे। खुद भी हम इस दिशा में पड़ताल करेंगे।

अब जानिए क्या है पूरा मामला: रायपुर के टिकरापारा इलाके में सरकारी कार्यालय के पास अंडा ठेला लगाने वाला व्यक्ति (दिलावर खान) बांग्लादेशी नागरिक है। टिकरापारा पुलिस को 13 जून को यह जानकारी मिली थी। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने दिलावर खान की जानकारी जुटाई और टिकरापारा के धर्मनगर इलाके में स्थित उसके किराए के मकान में दबिश दी। दिलावर खान के घर से पुलिस ने उसकी पत्नी परवीन बेगम और उसकी नाबालिग बेटी को हिरासत में लिया। दिलावर खान का बेटा मलेशिया में है और उसकी जानकारी पुलिस जुटा रही है। पुलिस की पूछताछ में दिलावर खान ने 16 साल पहले पत्नी परवीन और एक साल के बेटे के साथ रायपुर आने की बात स्वीकारी है। हालांकि उनकी बेटी छत्तीसगढ़ में हुई है। बांग्लादेश के मुंशीगंज से 16 साल पहले बॉर्डर पार कर एक शख्स रायपुर पहुंचता है। इसके बाद एक साल में ही अपनी पत्नी को भी अवैध तरीके से बॉर्डर पार करवाते हुए ले आता है। इतना ही नहीं उसने एक फेक मार्कशीट भी बनवाई।

इसी फेक मार्कशीट से अब पासपोर्ट जैसे अहम दस्तावेज भी बन गए। आरोपी का नाम मो. दिलावर खान है। रायपुर पुलिस ने दिलावर और उसके परिवार के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है।

दिलावर खान और उसके परिवार के अलावा छत्तीसगढ़ में एक दर्जन से ज्यादा बांग्लादेशी नागरिक पकड़े जा चुके हैं। ये गिरफ्तारी रायपुर के अलावा दुर्ग और रायगढ़ जिले में हुई है। जितने भी बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार हुए, वे सभी लंबे समय से छत्तीसगढ़ में रह रहे हैं। इन बांग्लादेशी नागरिकों में से कुछ छत्तीसगढ़ में रहने के दौरान 4-5 बार बांग्लादेश होकर आए हैं। इसके अलावा फोन और ऐप के माध्यम से लगातार संपर्क में रहे हैं। पुलिस की जांच में ये सब बात सामने आई है। हर बार पुलिस या एटीएस ने अपने स्तर पर बांग्लादेशी नागरिकों पर कार्रवाई की है। दिलावर खान और उसके परिवार का फर्जी दस्तावेज बनाने में मदद करने वाले मददगारों की कुंडली पुलिस निकाल रही है। दिलावर के यहां काम करने वाले कर्मचारी के अलावा मकान मालिक और दस्तावेज बनाने के लिए अनुशंसा पत्र देने वालों की भी जानकारी जुटाई जा रही है। पुलिस ने दिलावर खान के घर से कुछ दस्तावेज जब्त किए हैं। इन दस्तावेजों की हैंड राइटिंग एक्सपर्ट से जांच करवाई है। केस की जांच कर रहे अफसरों का कहना है, कि आने वाले दिनों में दिलावर खान के सभी मकान मालिकों और उसके मददगारों पर भी कार्रवाई की जाएगी। दिलावर छत्तीसगढ़ में अब तक 4 किराए के मकानों में रह चुका है।

फर्जी दस्तावेज से फर्जी डॉक्युमेंट्स बनवाएं

फर्जी दस्तावेज से फर्जी डॉक्युमेंट्स बनवाएं । रायपुर पुलिस के मुताबिक दिलावर खान को फर्जी मार्कशीट बनाने में मदद उसके ठेले में काम करने वाले एक कर्मचारी ने की। कर्मचारी ने मार्कशीट बनाने के बदले 1000 रुपए लिए और रीवा जाने के लिए किराया मांगा। दिलावर ने उस कर्मचारी को 1 हजार रुपए दिए। कर्मचारी ने उसे कुछ दिनों बाद मार्कशीट बनाकर दे दी। पुलिस सूत्रों के मुताबिक ये मार्कशीट मध्यप्रदेश के रीवा जिले के त्योंथर तहसील के एक माध्यमिक विद्यालय की थी। मार्कशीट और किरायानामा के आधार पर दिलावर ने पेन कार्ड, आधार कार्ड और पासपोर्ट बनवाया। अपने दस्तावेज बनाने के बाद दिलावर ने अपने परिवार के अन्य सदस्यों के दस्तावेज बनवाए। दिलावर के यहां काम करने वाले कर्मचारी के नाम का खुलासा अभी पुलिस ने नहीं किया है।

4 क्विंटल नकली फंगीसाइड पकड़ाया, नेटवर्क की जांच करेगी पुलिस

सतना में किराए के कमरे में बनाया जा रहा था, सील किया

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में नकली फंगीसाइड बनाने के आरोप में एक घर में दबिश दी गई। यहां से 4 क्विंटल नकली कीटनाशक दवा जब्त की है। जहां दवा बनाई जा रही थी, उस कमरे को सील किया गया है। इस दवा की बाजार कीमत 1136 रुपए प्रति यूनिट है। इस तरह के काम के पीछे गिरोह का काम होने की आशंका है। अब पुलिस पूरे मामले की जांच कर नेटवर्क का पता लगाने की कोशिश करेगी।

प्रशासन की टीम इन्कयूबेशन सेंटर के पीछे नई बस्ती में एसडीएम सिटी राहुल सिलाडिया के साथ पहुंची। बायर कंपनी के नेटिव ब्रांड के नाम से बन रहे नकली उत्पाद का पर्दाफाश किया।

मौके से लगभग 4 क्विंटल नकली कीटनाशक दवा बरामद की गई। इस दवा की बाजार कीमत 1136 रुपए प्रति यूनिट है। नकली कीटनाशक का निर्माण रामपाल प्रजापति के किराए के मकान में हो रहा था। मकान मालिक द्वारा किराएदार की पहचान नहीं बताई जा रही है।प्रशासन ने किसानों से कृषि उत्पाद खरीदते समय कंपनी का क्यूआर कोड चेक करने की अपील की है। प्रशासन को आशंका है कि यह एक संगठित गिरोह का हिस्सा हो सकता है। पूरे नेटवर्क की जांच जारी है। फिलहाल कमरे को सील कर दिया गया है।

सर्वे के दौरान पकड़ में आई बात: बायर कंपनी के प्रतिनिधि ने बताया कि मार्केट सर्वे के दौरान प्रोडक्ट की गड़बड़ी की बात सामने आने पर जब कीटनाशक की जांच की। वह नकली था। मार्केट में खोजबीन करने के दौरान नई बस्ती में नकली माल तैयार होने की जानकारी मिली। इसके बाद कंपनी के प्रतिनिधियों ने एसडीएम सिटी राहुल सिलाड़िया से मिल कर दबिश की रूप रेखा तैयार की।

प्रेमी के साथ मिलकर की थी दादी की हत्या, शव नाले में फेंका

दोनों आरोपी नाबालिग

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले में सुनसान नाले में मिली अर्द्ध नग्न महिला की लाश के मामले में पुलिस ने बड़ा खुलासा किया है। 65 वर्षीय महिला की हत्या करने वाले कोई और नहीं, बल्कि उसकी नातिन और प्रेमी ही निकले। दोनों ने प्रेम प्रसंग में बाधा बनने पर इस वारदात को अंजाम दिया। हैरानी की बात यह भी है कि आरोपी नातिन और उसका प्रेमी दोनों ही नाबालिग हैं। एएसपी विवेक लाल ने बताया कि 18 जून को थाना अतरैला पुलिस को सूचना मिली थी कि कोनी जंगल में बनिया नाले के पास किसी महिला का शव पड़ा है। महिला के शरीर पर चोट के निशान थे। मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने एफएसएल और फिंगरप्रिंट टीम को बुलाकर साक्ष्य जुटाए। शव की पहचान कराने के प्रयास शुरू किए गए। इस आधार पर थाना अतरैला में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई।

गांव के ही एक लड़के से था प्रेम प्रसंग: पूछताछ में महिला की पहचान निवासी ग्राम कोनी, थाना अतरैला के रूप में हुई। जांच के दौरान पता चला कि मृतका की नातिन का गांव के ही एक लड़के से प्रेम प्रसंग चल रहा था। इस बात का विरोध घरवाले कर रहे थे। लड़की का विवाह भी हाल ही में जबरन करवा दिया गया था। प्रेमी के पिता भी इस रिश्ते के खिलाफ थे और बेटे की पिटाई करते थे। जांच के दौरान पता चला कि वारदात के समय दोनों ही महिला के शव के आसपास देखे गए। पुलिस ने इसी आधार पर दोनों से पूछताछ की तो उन्होंने सच्चाई बता दी।

काम के बहाने बुलाकर मार डाला : इसी नाराजगी में दोनों ने मिलकर वारदात की साजिश रची। दोनों ने काम के बहाने महिला को सुनसान जगह बुलाया और चाकू से हमला कर हत्या कर दी। बाद में शव को घसीटकर दूर छिपा दिया। आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने घटना में प्रयुक्त चाकू और उनके कपड़े बरामद कर लिए हैं। दोनों को गिरफ्तार कर वैधानिक कार्रवाई की जा रही है। इस हत्याकांड में मृतका की नातिन और उसका प्रेमी दोनों आरोपी बनाए गए हैं। जिन्हें

पिता के दोस्त ने नाबालिग से किया रेप

घर पर छिपा हुआ था, शोर मचाने पर भागा, परिजनों ने पुलिस के हवाले किया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के बिछिया थाना क्षेत्र में 13 साल की एक नाबालिग से घर में घुसकर रेप का मामला सामने आया है। घटना बुधवार देर रात की है। आरोप नाबालिग के पिता के 25 वर्षीय दोस्त पर लगा है। लड़की के शोर मचाने पर भाग रहे आरोपी को परिवार ने ही पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। दरअसल, बुधवार देर रात पीड़िता अपने कमरे से वॉशरूम जाने के लिए बाहर निकली थी। आरोप है कि इसी दौरान घर में छिपे आरोपी ने उसे पकड़ लिया और उसके साथ रेप किया।

पिता से दोस्ती का फायदा उठाया: पुलिस के मुताबिक, आरोपी वीर यादव (25) पीड़िता के पिता का दोस्त है। दोस्ती होने की वजह से उसका घर में अक्सर आना-जाना था। उसने इसी का फायदा उठाया और रात में छिपकर घर में घुस गया था।

परिवार ने आरोपी को पकड़ा: रेप के दौरान जब पीड़िता ने शोर मचाया तो परिवार के लोग मौके पर पहुंचे। उन्हें देखकर आरोपी भागने लगा। परिवार वालों ने उसे पकड़ लिया और पुलिस को सूचना दी।

आरोपी गिरफ्तार, जेल भेजा गया: एडिशनल एसपी विवेक लाल ने बताया, "आरोपी वीर यादव के खिलाफ पास्को एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। जिसे गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया है। जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।"

सतना के तालाब में मिला नर्सिंग कर्मचारी का शव

बाबूपुर सोहावल में चार दिनों से लापता था; परिजनों ने लगाया हत्या का आरोप

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के सिविल लाइन थाना क्षेत्र के बरजहा तालाब में गुरुवार सुबह एक युवक की लाश मिली। मृतक की पहचान बाबूपुर सोहावल निवासी सत्येंद्र चौधरी (34) के रूप में हुई है। सुबह करीब 10 बजे वहां से गुजर रहे ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी।

जानकारी के अनुसार, सत्येंद्र ने नर्सिंग की पढ़ाई पूरी कर 20 दिन पहले ही बिरला अस्पताल में नौकरी शुरू की थी। परिजनों ने बताया कि वह 17 जून से लापता था, जिसकी रिपोर्ट सिविल लाइन थाने में दर्ज कराई गई थी। मृतक के भाई सुखेंद्र चौधरी ने हत्या का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया कि पिछले 10 साल से पड़ोसी दयानंद चौधरी के परिवार से विवाद चल रहा है। आरोपियों ने पहले भी उन पर जानलेवा हमला किया था। इस संबंध में थाने से लेकर आईजी ऑफिस रीवा तक शिकायत की गई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। थाना प्रभारी योगेंद्र सिंह ने बताया परिजनों के आरोपों के बाद फोरेंसिक टीम को बुलाया गया है। तालाब के आसपास के क्षेत्र की जांच की जा रही है।

घर के बाहर से दिनदहाड़े स्कूटी चुरा ले गए बदमाश

मैहर में बाइक सवार तीन युवकों ने की वारदात, सीसीटीवी में कैद हुई घटना

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। मैहर के हरनामपुर ओवर ब्रिज के पास बाइक सवार तीन युवकों ने स्कूटी चोरी कर ली। पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। घटना गुरुवार शाम करीब 5 बजे की है। हर्ष त्रिपाठी अपनी स्कूटी से हरनामपुर में अपने निर्माणाधीन मकान का काम देखने पहुंचे थे। उन्होंने स्कूटी बाहर खड़ी की और मकान के अंदर चले गए।

आधे घंटे बाद जब वे बाहर आए तो स्कूटी गायब थी। आसपास तलाश करने के बाद भी स्कूटी का कोई पता नहीं चला। पास में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज में देखा गया कि तीन युवक मोटरसाइकिल से वहां पहुंचे। एक युवक वहीं उतर गया, जबकि दो आगे निकल गए। कुछ देर बाद वे दोनों वापस लौटे।

पुलिस को शक है कि स्कूटी चोरी में इन्हीं तीनों का हाथ है। हर्ष ने मैहर थाने में स्कूटी चोरी की शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोरों की तलाश कर रही है।

जिले के पर्यटन स्थलों तथा सभी पंचायतों में 21 जून को मनाया जाएगा योग दिवस

विश्व योग दिवस कार्यक्रम में सबकी भागीदारी करें सुनिश्चित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विश्व भर को भारत ने योग का उपहार दिया है। देश में प्राचीन काल से शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए योगाभ्यास तथा प्राणायाम करने की परपंरा रही है। आगामी 21 जून को विश्व योग दिवस जिले के सभी शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में मनाया जाएगा। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने योग दिवस के तैयारियों की समीक्षा की। कलेक्टर ने कहा कि विश्व योग दिवस हम सबको तन और मन को स्वस्थ रहने का संदेश देता है। जिले के सभी नगरीय निकायों और सभी ग्राम पंचायतों में 21 जून को विश्व योग दिवस के कार्यक्रम आयोजित करें। जिला स्तरीय कार्यक्रम शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मार्तण्ड क्रमांक एक के परिसर में सुबह 6 बजे 8 बजे तक आयोजित किया जा रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल होंगे। समारोह में योग दिवस पर प्रधानमंत्री जी और मुख्यमंत्री जी के उद्बोधन के सजीव प्रसारण की सभी स्थलों में व्यवस्था सुनिश्चित करें। वर्षा को ध्यान में रखकर योग दिवस के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं करें। विश्व योग दिवस पर जिले के प्रमुख धार्मिक स्थलों, पर्यटन स्थलों तथा नगर के प्रमुख पार्कों में भी योगाभ्यास कराएं।

बैठक में कलेक्टर ने कहा कि योग दिवस के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी शासकीय संस्थाएं तथा निजी संस्थाएं भारत सरकार की वेबसाइट योगा डॉट आयुष डॉट जीओभी डॉट/इन योगा-संगम में पंजीयन अवश्य करा लें। कार्यक्रम के संपन्न होने के बाद गूगल लिंक पर फोटो सहित पूरा विवरण अपलोड करें। योग दिवस के फोटो तथा वीडियो पूरे विवरण के साथ जनसंपर्क कार्यालय को ईमेल पीआरओ रीवा 5 एट द रेट जीमेल डॉट कॉम पर अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराएं। योग दिवस पर सामान्य योगाभ्यास का प्रोटोकाल योगा संगम पोर्टल से भी प्राप्त किया जा सकता है। अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा सभी महाविद्यालयों में तथा जिला शिक्षा अधिकारी सभी माध्यमिक स्कूल, हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूलों में योगाभ्यास का आयोजन कराएं। आयुष विभाग के तहत सभी 30 आरोग्य मंदिरों तथा आयुर्वेद संस्थाओं में योग दिवस पर विशेष कार्यक्रम होंगे। जिला आयुष अधिकारी इसके लिए आवश्यक प्रबंध करें। जिला आयुष अधिकारी विभाग में दर्ज योग शिक्षकों की सेवाएं स्वयंसेवी संस्थाओं तथा शासकीय संगठनों को उपलब्ध कराएं।

कलेक्टर ने कहा कि आयुक्त नगर निगम शहर में अटल पार्क, विवेकानंद पार्क तथा अन्य प्रमुख स्थलों में योग दिवस पर सामूहिक योगाभ्यास का आयोजन कराएं। सभी नगर परिषदों में भी आसपास के पर्यटन स्थल अथवा शहर के प्रमुख पार्क में योगाभ्यास का आयोजन कराएं। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सभी ग्राम पंचायतों में योग दिवस के कार्यक्रम की व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। अमृत सरोवरों के किनारे भी योग दिवस के कार्यक्रम आयोजित कराएं। जिला समन्वयक जन अभियान परिषद अन्य संगठनों के सहयोग से जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों, नदियों के उ–म स्थल तथा पार्कों में योगाभ्यास के कार्यक्रम आयोजित करें। बैठक में आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर, जिला शिक्षा अधिकारी सुदामालाल गुप्ता, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संजीव शुक्ला, संभागीय खेल अधिकारी एमके धौलपुरी, संभागीय समन्वयक जन अभियान परिषद प्रवीण पाठक, डीपीसी विनय मिश्रा तथा अन्य संबंधित अधिकारी एवं योग प्रशिक्षक उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।